मार्गदर्शक

भाई नेविल, प्रभु आपको आशीष दे।

आज रात इस कलीसिया में वापस आकर मैं बहुत खुश हूं। मेरा गला खरखरा रहा है। आज प्रात: लम्बा संदेश हो गया था, और मैं प्रसन्न हूं कि यद्यपि यह यहाँ पर था। और मैं स्वयं भी इसे लाते हुए इसका आनंद ले रहा था, और मुझे आशा है कि आप को भी इसे सुनकर आनंद मिला होगा। [सभा कहती है, "आमीन।"—सम्पा।]

2 अब कभी इस बात को ना भूले, हमेशा ही याद रखे, कि यही चीजें हैं जो मसीह के सेवक को तैयार करती हैं। देखिए, पहले विश्वास, और फिर सद्गुण। और अब याद रखिए, पवित्र आत्मा परमेश्वर के इस भवन को तब तक चोटी के पत्थर से नहीं ढांकेगा जब तक यह सारी बातें पवित्र आत्मा के द्वारा संचालित ना हो। इससे कुछ मतलब नहीं पड़ता कि आप क्या करते हैं, देखा। यही वह चीजे है जो कि मसीह की देह को बनाती है, देखिए, वही चीजे। अब, इसको मत भूलिए, *यहाँ* सबसे पहले, ये आपका विश्वास है। सद्गुण, ज्ञान, और इस तरह से इत्यादि, इसमें जोड़ा जाना है, जब तक कि मसीह का पूरा रूप प्रगट ना हो जाए, तब पवित्र आत्मा ऊपर उतर कर और इस देह को एक ही रूप में मोहर कर देता है। यह होना ही चाहिए। इसलिए, यीशु ने कहा, "उनके फलों से तुम उन्हें पहचान लोगे।" देखिए, फलो से! जब तक आप अपने में इन चीजों के नहीं रखेगे तब तक आप फल नहीं ला सकते। और जब यह सारी चीजें सांसारिक और—और अभक्ति, और इत्यादि का स्थान ले लेती है, तब सारा अविश्वास निकाला जाता है, उसके बाद संसारिक सारी वस्तुये निकल जाती है, तब वहां और कुछ नहीं केवल मसीह में एक नई सृष्टी होती है। और तब इफिसियों 4:30 कहता है, "परमेश्वर के पवित्र आत्मा को शोकित ना करो, जिस से तुम पर छुटकारे के दिन तक के लिए मोहर की गयी है।" आप परमेश्वर के राज्य के लिए मोहर किए हुए है! अब, यह ना भूले। आप अपने मस्तिष्क में रख ले, कि *यह* चीजे आपको पहले लेनी है। तब पवित्र आत्मा ही मोहर है, यह वह चोटी है जो हमें देह में मोहरबन्द करती है। यह सही बात है।

3 अब हमारे पास शिकागो वाली बहन लिटिल का एक—एक निवेदन

आया है, उनके पति की एक कार से दुर्घटना हो गयी है और वे मृत्यु के समीप पड़ा हुआ है, बहन लिटिल। और हमारी छोटी बहन एडिथ राईट, जो यहाँ है जिसके विषय में हम उसे लंबे अर्से से जानते हैं, कि वो बहुत ही, बहुत ही खराब हालत में, आज रात अपने घर पर है, और उन्होंने चाहा कि यह कलीसिया में सुना दिया जाये जिससे हम सब मिलकर उनके निवेदन पर प्रार्थना करे। और अब आईये हम थोड़ी देर के लिए अपने सिरों को झुकाये।

4 हमारे बहुमूल्य, स्वर्गीय पिता, हम सब (विश्वास के द्वारा) परमेश्वर के सिंहासन के चारो ओर जमा हुए हैं, और आपसे इन निवेदनो के लिए दिव्य अनुग्रह चाहते हैं। भाई लिटिल, जो कि एक कार दुर्घटना से, मृत्यु के समीप है। परमेश्वर, आप उनकी सहायता करें। होने दे कि आपका पवित्र आत्मा उनके बिस्तर के पास हो और प्रभु, वह फिर से हमारे बीच में हो। और वह छोटा एडिथ राइट जो कि वहाँ है, मैं प्रार्थना करता हूं, परमेश्वर, कि आज रात्री पवित्र आत्मा उनके बिस्तर के पास हो और उसके स्वास्थ्य को उसे वापस लौटा दे। पिता, यह प्रदान कीजिए। क्योंकि तूने इन बातों की प्रतिज्ञा की है, और हम उनका विश्वास करते हैं। और जैसा आज प्रात: हम सोच रहे थे, कि दूरी आपके लिए कोई मतलब नहीं रखती, आपके लिए जैसे दुनिया का एक भाग हैं वैसे ही दूसरा भाग भी हैं, क्योंकि आप तो सर्वव्यापी, सर्वशक्तिमान, और अनंत हैं। और पिता, हम प्रार्थना करते हैं, कि आप यीशु मसीह के नाम में इन विनंतीयों को प्रदान करेंगे। आमीन।

5 आज रात्री यहां पर फिर से होने के लिए हम अत्यन्त प्रसन्न है... और मैं जानता हूं कि गर्मी है। हमारी तीन लगातार सभाये है, और यह... मैं जानता हूं कि आप में से बहुतो को अभी और प्रात: के बीच पांच सौ मील कार चलानी है। और कल के बाद आरंभ करते हुए, मुझे चौदह सौ मील गाडी चलानी है। इसलिए, इसलिए मैं—मैं विश्वास करता हूं कि यह हम सब के लिए एक अच्छा शुभ अवसर है। और मेरे लिए भी कि मैं आप सब से मिल सका। वहां एक ही चीज है कि हमारे पास निवेदन आये है, कि बहुत सारे लोग स्थान ना होने के कारण वापस चले गए है, हम गलियारों को बहुत अधिक भीड़ से नहीं भर सकते हैं, क्योंकि इसके लिए अग्निशामक शांत नहीं बैठेगा। इसलिए हम प्रयत्न कर रहे कि इससे बड़ा भवन मिल जाये, ताकि जब हम आये, तो बैठने का स्थान लोगों को मिल सके।

6 और अब, किसी भी समय, आपका सर्वदा इस आराधनालय में स्वागत है, जहां हमारी कोई संस्था नहीं है एक केवल मसीह है, ना कोई नियम है परन्तु केवल प्रेम है, बाईबल को छोड़ कोई और किताब नहीं है। और इसलिए... और हमारे पास्टर भाई ओरमन नेविल यहां है। और आज यहां सभा में बहुत से लोग जमा हुए है जो की—की भिन्न अन्तरसंप्रदाय से इस आराधनालय में हैं, आप यहां पर परमेश्वर की आराधना करने के लिए अपने विवेक से प्रेरित होकर आते हैं। आप लोगो को यहां पाकर हमें हमेशा प्रसन्नता होती हैं। और इसलिए जब भी हो आप आये, आपको पाकर हमें ख़ुशी होगी।

7 और अब अगली बार, जहां तक मैं सोचता हूं, मैं आपके साथ इस कलीसिया के पूरा हो जाने के बाद होऊंगा। और मैं चाहता हूं, कि तब *सात कलीसियायी काल* के बाद, आखरी सात *मोहरों* का अध्यन करे, और हम प्रकाशितवाक्य की पुस्तक की आखरी सात *मोहरो* का अध्यन करेंगे।

8 और अब बहुत सी बार यहां बीमार और दुर्बल लोग आते है, और इन सभाओं के समय, जहां दर्शनो की आवश्यकता होती है, और कुछ लोग विशेष इंटरव्यू के लिए आते हैं। यदि मैं इंटरव्यू के लिए उनसे बात करता हूं, तो उनमें मैं—मैं कोई भिन्नता नहीं पाता, और, नहीं, आप जानते है कि उसके बाद मुझे प्रचार करने में कठिनाई होती है। और सब जानते है कि चंगाई सभा अभियानों में, कि श्रीमान बैक्सटर या कोई तो और वचन प्रचार करता है, और मैं बाहर आकर बीमारों के लिए प्रार्थना करता हूं, क्योंकि यह बस थोड़ी थकान कर देता है। और अभी कुछ क्षण पहले मैं कुछ लोगों के लिए प्रार्थना कर रहा था, और तब मैं यहाँ एक छोटे बच्चे से मिला जिसको डॉक्टरो ने... उसके पीठ पर कुछ तो था, और वह ऐसे ही पैदा हुआ था। जब बाहर आया तो देखा वह वहां एक सांचे में बैठा हुआ है। उस बच्चे को तो अब इस तरह से अपंगता में रहना नहीं होगा, वह तो ठीक होने जा रहा है। उसे तो निश्चय ही, ठीक होना है, देखो। यही है, मैं ऐसा जानता हूं। देखा, मैं इस विषय में सकरात्मक हूं। अत: हमारा परमेश्वर में विश्वास और भरोसा होना चाहिए।

9 आप में से हर एक जन, आप में से बहुत से, और कुछ सेवकगण मेरे लिए परदेसी और वगैरा है। यदि मैं गलती ना करूं, तो यह भाई क्रेज है। क्या ये सही है? भाई क्रेज, मैं—मैं आपसे क्षमा मांगता हूं, कि वहां

समर्पण के लिए नहीं पहुंच सका था। हो सकता है कि मैं सप्ताह के अन्त की सभा में, जहां तक सम्भव हो सकेगा पहुंचुंगा। क्या यह ठीक है? वह सभा ब्लूमिंगटन में है। क्या सब ठीक चल रहा हैं? बहुत अच्छा। यहां पर कुछ भाई लोग सेवकगण हैं, मुझे कुछ ऐसा लग रहा है। आप सेवकगण है? जी हां, श्रीमान। प्रभु आपको आशीष दे। और यहां पर कितने सेवकगण है, आइये जरा हाथ खड़ा करे। अरे, यह तो बहुत अच्छी बात है। आपको यहां पाकर हमें खुशी हैं, बस बहुत ही आनंद की बात है। परमेश्वर आपको सर्वदा आशीषित करे!

10 अब, हम जल्द ही समाप्त करेगें, उनमें से कुछ लोगों को जॉर्जिया, टेनेसी, न्यूयॉर्क, जगह–जगह जाना है, और रात ही को, उन्हें यात्रा शुरू करनी है। अब, सड़क पर गाड़ी ध्यान से चलाये। यदि आपको झपकी आ रही हो, और आप एक होटल में जाना ना चाहते हो, तो गाड़ी सड़क से नीचे उतार कर वही सो ले जब तक आप... देखो भाई मैं तो ऐसे ही करता हूं। मैं गाड़ी चलाना बन्द करता हूं और सो जाता हूं। जब नींद आये तो गाड़ी ना चलाये। यह ठीक नहीं है। और, याद रखिए, आपको अपना ही नहीं, वरन दूसरे व्यक्ति का भी आपको ध्यान रखना है। समझे? आप जानते हैं कि आप कहां जा रहे हैं, परन्तु वह कहां जा रहा है आप नहीं जानते, इसलिए—इसलिए—इसलिए आप उस व्यक्ति की चौकसी रखे। अत:, आप इस बात में निश्चित रहे, कि आप उसका ध्यान रखने हेतू चौकस हैं।

11 अब, आज रात मैं संत यूहन्ना की पुस्तक में से वचन का कुछ भाग पढ़ना चाहता हूं। अब, वचन के यह छोटे–छोटे अंश जिन्हें हम पढ़ते हैं और जिसका हम उल्लेख करते हैं, यह वह हैं, जो हमें उन बातो के लिए आधार प्रदान करते है जिन्हें कहने की चेष्टा करते हैं। और हमेशा ही, मेरे साथ ऐसा एक बार भी नहीं हुआ, जहां तक मुझे याद है, कि मैं मंच पर आकर, ऐसे ही कुछ तो कहने का प्रयास किया हो। मैं हमेशा ध्यान रखता हूं, प्रतीक्षा करता हूं, अध्ययन करता हूं, और प्रार्थना करता हूं, जब तक मुझे यह ना लगे कि अब मेरे पास कुछ तो है जिससे लोगों की सहायता हो सकेगी। यदि मैं लोगो की सहायक नहीं कर सकता हूं, तो मेरे यहां खड़े होने का कोई लाभ नहीं है, समझे। मैं सहायता करने की कोशिश करता हूं! और सच में आज रात, भीड़ का के बहुत बड़ा भाग आज से सुबह से चले गये है, और उनमें से बहुतों को घर जाना था। परन्तु, आज रात, मैंने आपको बताया कि यदि आप लोग यहां रुकने की कोशिश करते है तो हम

लगभग पैंतालीस मिनट के लिए किसी एक विषय पर बोलने का प्रयास करेंगे जिसके लिए मैं आशा करता हूं कि हमें सहायता होगी। और आज उसका आधार संत यूहन्ना का 16वां अध्याय होगा, और आईए हम 16वें अध्याय के लगभग उस—उस 7वें पद से आरंभ करके, और उस—उस 15वें पद तक पढ़ेंगे।

तौभी मैं तुम से सच कहता हूं; कि मेरा जाना तुम्हारे लिए अच्छा है क्योंकि यदि मैं ना जाऊं: क्योंकि यदि मैं ना जाऊं, तो वह सहायक तुम्हारे पास ना आएगा; परन्तु यदि मैं जाऊंगा, तो वह सहायक तुम्हारे पास भेज दूंगा।

और वह आकर, संसार को पाप और धार्मिकता और न्याय के विषय में निरुतर करेगा:

पाप के विषय में, इसलिए कि वे मुझ पर विश्वास नहीं करते;

और धार्मिकता के विषय में, इसलिए कि मैं पिता के पास जाता हूं, और तुम मुझे फिर ना देखोगे;

न्याय के, विषय में इसलिए कि संसार का सरदार दोषी ठहराया गया है।

मुझे तुम से और भी बहुत सी बातें कहनी है, परन्तु अभी तुम उन्हें सह नहीं सकते।

परन्तु जब वह, अर्थात सत्य का आत्मा आएगा, तो तुम्हे सब सत्य का मार्ग बताएगा: क्योंकि वह अपनी ओर से ना कहेगा; परन्तु जो कुछ सुनेगा, वही कहेगा: और वो आने वाली बातें तुम्हे दिखाएगा।

क्योंकि, वह मेरी महिमा करेगा, क्योंकि वह मेरी बातों में से लेकर तुम्हें इसे बताएगा।

जो कुछ पिता का है, वह सब मेरा है—है: इसलिये मैंने कहा, कि वह मेरी बातों में से लेकर, और इसे तुम्हें बताएगा।

12 अब इस 13वें पद में। "परन्तु जब सत्य का आत्मा आएगा, तो वो तुम्हारा पूर्ण सत्य की ओर मार्गदर्शन करेगा। जब सत्य का आत्मा आता है, तो सम्पूर्ण सत्य की ओर ले जाएगा।" सत्य क्या है? वो वचन। "जब वह बोलेगा, तो वह अपनी ओर से नहीं बोलेगा; परन्तु जो वह सुनेगा, वही

बोलेगा। जो वह सुनता है, वही बोलेगा।" दूसरे शब्दों में, वह वही होगा जो आप पर बातें प्रगट करेगा, क्या आप समझे। और इब्रानियों के 4थे अध्याय में, पवित्र शास्त्र कहता है कि "परमेश्वर का वचन दोधारी तलवार से भी तेज, और सामर्थी है, जो एक—एक मन के विचारों, और ह्रदय को परखता है।" देखिए, "जो वह सुनता है, वही बोलेगा, और तुम्हे आने वाली सब बातें दिखाएगा।" समझे? वह क्या करने जा रहा है? वह पवित्र आत्मा जो प्रभु यीशु के नाम में आएगा।

13 और मैं चाहुंगा कि आपका ध्यान कुछ मिनटो के लिए "मार्गदर्शक," शब्द की याने *मार्गदर्शक* की ओर ले जाऊं। आप जानते हैं, कि मुझे जंगलो का अच्छा अनुभव है। जंगलो को दिखाने के लिए, आपके साथ एक मार्गदर्शक होना चाहिए। आपके साथ एक मार्गदर्शक होना ही चाहिए जब आप यह ना जानते हो कि आप कहां जा रहे हैं। और शिकार से परिचित होंगे, और संसार भर में घुमने के कारण, मुझे मार्गदर्शकों से मिलने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। और मैं खुद भी कोलोरोडो में एक मार्गदर्शक रहा हूं, क्योंकि, मैं कोलोरोडो के जंगलो की घाटियो के विषय में जानता हूं, इत्यादि, इसलिए मैं केलोरोडो में मार्गदर्शन कर सकता हूं।

14 अब, एक मार्गदर्शक को मार्ग मालूम होना ही चाहिए। उसको मालूम होना चाहिए कि वह कहां जा रहा है और वह क्या कर रहा है, और रास्ते में आपकी कैसे देखभाल करनी चाहिए। समझे? उसे ध्यान रखना है कि आप कहीं खो ना जाये। एक मार्गदर्शक एक चुना हुआ व्यक्ति होता है। यदि वह मार्गदर्शक है, तो प्रान्त ही उसका चुनाव करता है। और, अब, जब कभी आप जंगल के दौरे पर जाये, जहाँ कि आपका आना जाना नहीं होता है, तो बैगेर मार्गदर्शक के जाना आपके लिए ठीक बात नहीं है। स्पष्ट भाषा में, कुछ जगहों पर आप उनके बिना नहीं जा सकते हैं, जैसे कि, कनाडा। उस—उस मार्गदर्शक शिकारगाह के ऑफिसर के सामने आपके लाइसेंस पर हस्ताक्षर करेगा। उसको स्वयं अपने हस्ताक्षर अन्दर जाने के लिए, और आपका जिम्मा लेने के लिए करने पड़ते है। यदि आपको कुछ हो जाता है, तो यह उसकी जवाबदारी है। उसको आपकी देखभाल करनी ही है। उसे देखना ही है कि आप कही खो ना जाये। उसे अपने में निश्चित रहना है कि वह आपको ऐसे स्थान में ना जाने दे, जहां से आप वापस ना आ पाये। और यदि आप खो जाये, तो उसे क्षेत्र का इतना ज्ञान होना चाहिए कि वह आपको किसी भी समय ढूढ़ निकाले। इन सब बातों का उसे ज्ञान होना

चाहिए नहीं तो वह एक मार्गदर्शक नहीं बन सकता, ना ही उसे अनुमति होगी कि वह मार्गदर्शक बने।

15 इन चीजों के लिए, कभी–कभी आपको पहले से ही सब कुछ निर्धारित करना होता है, पहले से फ़ोन करके व्यवस्था कर लें, आरक्षण करवा लें, कि आपको लेकर जाये। और यदि आपने... कभी–कभी वो व्यस्त हो जाता है और तो वो आपको नहीं ले जा सकता है, आपको इसे थोड़ी देर के लिए टालना होगा, इस—इस सांसारिक मार्गदर्शक के विषय में। आपको परमेश्वर के मार्गदर्शक के लिए ऐसा कभी नहीं करना होता है, वह सदा तैयार रहता है, हमेशा ही तैयार रहता है।

16 अब, यदि आपने यह तैयारियों को नहीं किया हैं, और आप जंगल की यात्रा में घूमने का विचार कर रहे हैं, जहां आप पहले कभी नहीं गए है, हो सकता है आप खो जाए, और नाश हो जाये। आपकी केवल एक प्रतिशत संम्भावना है कि आप जंगल से बाहर आ जाये, अर्थात, यदि ये बहुत ही घना जंगल नहीं है, तो एक प्रतिशत संभावना है कि आप स्वयं बाहर आ जाये। परन्तु यदि वह खराब जंगल है, बहुत दूर तक, आपको बाहर आने का मौका नहीं मिलता है। वहां कोई भी तरीका नहीं चलता, क्योंकि आप अपने को मृत्यु के मार्ग पर चलता हुआ पाते हो, और तब आपकी—आपकी शक्ती आशाये समाप्त हो जायेगी। अब, और आप नाश हो जाते है यदि आपने कोई मार्गदर्शक नहीं लिया जो उस जंगल को जानता हो कि आप कैसे वापस जायेगे।

17 आप में से बहुत से उस लेख से परिचित होंगे जो कि आपने पिछले वर्ष स्काऊट लड़को के विषय में पढ़ा है, जो ट्यूसान, एरिजोना में थे। यदापि, वह इस बात के लिए कि अपनी सुरक्षा कैसे की जाती है प्रशिक्षित थे, क्योंकी वे स्काउट थे। और वे लोग छोटे स्काऊट नहीं थे, परन्तु वे पूर्ण स्काऊट थे। और जब वे पर्वतो की यात्रा पर थे, तभी मौसम बदल गया, और बर्फीला तूफान आ गया। और तब उन्होंने पाया कि वे खो गए है और सब के सब मर गए, यह इसलिए हुआ... कि प्रतिदिन के मौसम से उसमें बदलाव आ गया, और इसमें से कैसे निकला जाये, वे नहीं जानते थे। समझे? और मुझे यह याद नहीं कि वह कितने लड़के पहाड़ो में थे जो नष्ट हुए थे, यदपि उनके पास हेलीकॉप्टर थे, और सेना, और राष्ट्र सुरक्षा, और स्वयं सेवा की सहायता, और इत्यादी चीजें थी। परन्तु वह भटक गए,

कोई नहीं जानता था कि वे कहां पर थे। और वे अपनी सुरक्षा नहीं कर सके थे। वे सब बर्फ में नष्ट हो गए थे क्योंकि वे नहीं जान पाए थे कि वे पूर्व, उत्तर, पश्चिम या दक्षिण कहा जा रहे है, ऊपर या नीचे, या यह कैसा था, उन्हें सब कुछ एक सा ही दिख रहा था।

18 अब, एक मार्गदर्शक जानता है कि वह कहां पर है, चाहे मौसम उसके लिए कोई मायने नहीं रखता। वह—वह ऐसा करने में सक्षम होता है। वह जानता है कि वह क्या कर रहा है। वह हर चीज से परिचित है। वह हर चीज की पहचान रखता है, इसलिए अंधकार में भी हो और वह कुछ छू कर मालूम कर सकता है।

19 उदाहरण के लिए, यहां एक मार्गदर्शक की एक पुरानी तरकीब है। आप जानते हैं, कि यदि आप तारों को देखे, तो कोई भी बता सकता है कि आप तारो को देख कर किस दशा में जा रहे हैं। और आप हमेशा ही किसी वास्तविक तारे को देखना चाहेंगे। और वह सही तारा उत्तर का तारा है। देखिए, वह केवल एक है, जो कि एक ही स्थान में स्थिर रहता है। यह मसीह को दर्शाता है, कि कल, आज और युगानुयुग एक सा है। और दूसरे तो घूमते रह सकते हैं, परंतु यह एक ही जैसा रहता है। कलीसियायें हो सकता है आपको *इस* ओर, या कुछ आपको *उस* ओर खींच सकती है; परंतु वह नहीं, वह सर्वदा एक सा रहता है।

20 मान लीजिए, बादलो से आप उत्तर के तारे को नहीं देख पाते हैं, और ये दिन का समय है, तब यदि आप ध्यान देंगे, यदि ये दोपहर का समय है और आप खो गए हैं, यदि आप पेड़ों को देखेंगे। और आप खो जाते है तो आप पेड़ो पर ध्यान देगे, वृक्ष के उत्तरी ओर पर सर्वदा काई जमी रहती है, क्योंकि पेड़ के दक्षिण भाग पर उत्तरी भाग की अपेक्षा अधिक सूर्य का प्रकाश गिरता है। लेकिन क्या हो यदि यह अंधेरा हो और आप काई को ना देख सके? यदि आप अपनी आंख बंद करके और कुछ भी सोचने की कोशिश ना करे, आंख बंद करके और चिकनी छाल वाले पेड़ को ले, फिर अपने हाथों को इस तरह से पेड़ के चारों ओर डाले कि आपकी उंगलियाँ आपस में मिल जाएं, और बहुत ही धीरे–धीरे चारों ओर घुमना शुरू करे। और जब आप उस जगह पहुँचते हो जहाँ छाल बहुत मोटी और टूटी–फूटी होती है, तो वह उत्तर दिशा (हवाओं की दिशा) होती है।, और आप बता सकते हैं कि आप उत्तर या दक्षिण की ओर बढ़ रहे हैं। और यह विधी है,

ओह, वहां बहुत सी चीजें हैं, परन्तु इसमें एक मार्गदर्शकों की आवश्यकता होती है कि यह सब कैसे किया जाये। बस एक साधारण व्यक्ति वहां खड़ा होता है और कहता है, "मुझे इसमें कोई फर्क महसूस नहीं होता है।" देखा? देखा, इस प्रकार के मार्गदर्शन के लिए आपको प्रशिक्षण लेना होगा।

21 और इसमें कोई संदेह नहीं कि यह लड़के अच्छे स्काऊट थे, वे कई प्रकार की गांठे लगा सकते थे, वे पत्थरों द्वारा आग उत्पन्न कर सकते थे, और उनमें ऐसी बहुत सी बातें थी। लेकिन अपने बाहर निकलने का मार्ग जानना एक किस्म की तरकीब है! वे, वे अपने बाहर निकलने के रास्ते को नहीं जानते थे, इसलिए वे सब नाश हो गए क्योंकि उन्होंने अपने साथ एक मार्गदर्शक को नहीं लिया था।

22 दो वर्ष पहले एक ना समझ पिता, कोलोराडो में, ओह, वह ऊपर पहाड़ों में जा रहा था, वो अपने साथ छह या सात वर्ष के छोटे लड़के को लेकर पहाड़ो में चला गया। वह उसे अपने हिरन के पहले शिकार पर ले गया। सो वह बहुत ऊंचे पहाड़ पर चढ़ गए, और छोटे लड़के ने अपने पिता से कहा, "मैं थक रहा हूं।"

23 "तुम मेरी पीठ पर आ जाओ। अभी हम काफी ऊंचाई पर नहीं आये हैं, हिरन ऊंचाई पर मिलते हैं।" वह आगे और आगे और आगे ऊपर चढ़ता गया... उस शहरी व्यक्ति को यह पता ही नहीं था। उसे कुछ मालूम ही नहीं था कि शिकार कैसे करते है या कहां जाना चाहिए। कोई भी व्यक्ति जो जंगल के विषय में जानता है, उसे ज्ञात होता है कि हिरन बहुत ऊंचाई पर नहीं रुकता। वे इतने ऊंचे पर नहीं जाते हैं। बकरियां ऊंचे पर जाती हैं, हिरन नहीं। वह तो नीचे की ओर मिलते हैं जहां उनका भोजन होता हैं, जहां उन्हें कुछ तो खाने को मिलता है। और, इसलिए, लेकिन इस व्यक्ति ने यह सोचा कि, "यदि मैं ऊपर चट्टानों में जाऊंगा, तो मुझे बड़ा नर हिरन मिल जायेगा।" उसने कहीं चट्टान पर—पर खड़े हिरन की तस्वीर देखी थी, और उसने सोचा कि वही पर वह उसे मिलेगा। उस पर ध्यान ना दें जो वे पत्रिकाएं बताती हैं, प्रभु, ओह, प्रभु, आपके पास एक बुरा सपना होगा! कि, वहां तो केवल एक काम करना था, कि एक मार्गदर्शक को साथ लेना था, ताकि मालूम पड़े कि आप कहां पर हैं।

24 और वो पिता, वहां पर यकायक वर्षा आ गयी, उनमें से ऐसी वर्षा जो वहां आती है। और वह व्यक्ति बहुत देर तक शिकार खेलता रहा, जब तक

अंधेरा ना हो गया और वह वापस जाने के लिए वह रास्ता ना ढूंढ सका। और... तब पहाड़ों की चोटीयों पर बहुत तेज हवा चलने लगी, और तब वह जल्दी–जल्दी तेजी से चलने लगा, और वह...

25 आपको जानना होगा कि कैसे जीवंत रहा जाये, यदि आप फंस जाये। तो आपको मालूम होना चाहिए कि किस प्रकार से ऐसे में बचा जाये! मैं पेड़ों पर चढ़ गया हूं और उन्हें नीचे सरकाता, और पेड़ों पर चढ़ कर और इस तरह से ऊपर और नीचे नीचे की ओर सरकाता हूं, जीवित रहने के लिए। मैंने भी इसी तरह से बर्फ हटायी, जब चारो ओर बर्फ ही बर्फ लगभग चार फुट थी, सूखे टूटे तने को तोड़कर और उसे नीचे डाल दिया। और मैं इतना भूखा था कि कठिनता से मैं उसे खड़ा कर सका! और पुराने सूखे तनो के खूटो को तोड़ कर, और उन में आग लगा कर गर्मी से बर्फ को पिघला दिया। और फिर प्रात: के लगभग एक या दो बजे, उन ठूंठो को उस स्थान से हटाकर, और उस जगह की गर्म जमीन पर लेट गया, ताकि जीवित रहे। और आप लोगो को मालूम होना चाहिए कि यह सब कैसे किया जाये।

26 और यह व्यक्ति नहीं जानता था कि वह क्या कर रहा है, क्योंकि कोई उसे दिशा निर्देश देने वाला नहीं था। और उसने अपने छोटे बेटे को अपने सीने से लगाकर तब तक पकड़े रखा, जब तक उसे ठंडा होते और मरते हुए महसूस नहीं किया। ना समझी! यदि उसने अपने साथ एक मार्गदर्शक को लिया होता था, वह उसे पहाड़ से नीचे वापस ला सकता था, चाहे समय कुछ भी होता, देखा। लेकिन वह तब तक रुका रहा जब तक अंधेरा ना हो गया, और वह अपना मार्ग ना पा सका।

27 आज मसीही लोगों के साथ यही परेशानी है। कि वह उस अंधकार के घिरने के समय तक प्रतीक्षा करते रहते हैं, तब आप अपने को बिना मार्गदर्शक के अकेला पाते हैं। मार्गदर्शक!

28 क्यों, क्या आपने कभी ऐसा भटका हुआ मनुष्य देखा है जो खो गया था? क्या किसी के पास ऐसा कोई अनुभव है कि आप किसी भटके हुए को वापस लाये हो? यह बहुत ही दयनीय बात है जो आपने कभी देखी हो। जब कोई मनुष्य भटक जाता है, तो वह जंगली सा हो जाता है। क्योंकि वह नहीं जानता है कि वह क्या कर रहा है। हमने वहां एक व्यक्ति को पकड़ा था, जो कि लड़का ही सा था, और वह जंगल में खो गया था, और उसने

सोचा कि... वह तो जंगल का चरवाहा था, लेकिन वह तो एक गलत स्थान में आ गया था, और वह घूमते हुए खो गया था। और जब उन्होंने उसे तीन दिन के बाद पाया, तो वह एक जंगली मनुष्य की तरह भागता फिर रहा था, और जोर–जोर से चिल्ला रहा था। उसने अपने होंठ चबा लिए थे, और अपनी बंदूक फेंक दी थी और उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि वह क्या करे। और जब उसका अपना भाई, जब... उन्हें उसे पकड़ना था और बांधना पड़ा। जब उसका ही भाई उसके पास आया, तो वह जानवर के समान उससे लड़ने लगा, उसे काटने की कोशिश करने लगा, वह नहीं जानता था कि वह कहां पर था। क्यों? वह खो गया था। और जब कोई व्यक्ति खो जाता है, तो वह घबराई हुई स्थिति में होता है। और वह नहीं जानता है कि वह ऐसी स्थिति में है, क्योंकि उसके खोजने से यह बुखार उसको घेर लेता है, और उसे यह नहीं पता होता है कि वह कहां पर है और वह कैसा व्यवहार कर रहा है।

29 ऐसा ही तब होता है जब एक मनुष्य परमेश्वर से अलग होकर खो जाता है! वह ऐसे काम करेगा जो साधारण मनुष्य नहीं करेगा। वह ऐसे काम करेगा जो—जो कि मनुष्य जाति के सोच से परे होंगे। एक मनुष्य जो परमेश्वर से अलग होकर भटक गया है, एक कलीसिया जो परमेश्वर से भटक गयी है, एक कलीसिया जो कि परमेश्वर से दूर चली गई है, वह परमेश्वर के उन सिद्धांतों से हट गयी है जो कि पवित्र शास्त्र में है, वह कभी–कभी ऐसे कार्य करेगी जिन्हें आप परमेश्वर की जीवित कलीसिया में देखने की आशा नहीं करते है। वे सट्टेबाजी, लॉटरियो, जुए, और जो कुछ भी वे कर सकते हैं, वे उनसे अपने लिए पैसा कमाते है। वह कुछ भी सिखा सकते है, चाहे उसका कुछ भी प्रभाव हो, केवल वह उसकी पीठ थपथपाते है जो कलीसिया में अधिक पैसा दान करे, और इसी तरह से इत्यादि, वे उसे कुछ भी करते देते है। यह ठीक है। ऐसे डिकन को बोर्ड में शामिल करते है जो चार या पांच बार विवाह कर चुका होता हैं, केवल इसलिए कि इनके काम पूरे हो जाये। हमें केवल एक ही कार्य पूरा करना है, और वह यह कि हमारा कर्तव्य परमेश्वर के प्रति क्या है। सत्य बताने के लिए तैयार रहना है! खोया हुआ, खोया हुआ व्यक्ति डरी अवस्था में होता है, वह एक पागल व्यक्ति होता है।

30 मार्गदर्शक के पास इस बात की समझ होती है, कि कैसे वहां पहुंच कर और क्या करना है। परमेश्वर... परमेश्वर हमेशा अपने लोगों के लिए एक मार्गदर्शक को भेजता है। परमेश्वर कभी असफल नहीं हुआ है। वह एक

मार्गदर्शक को भेजता है, परन्तु आपको उस मार्गदर्शक को स्वीकार करना होता है। समझे? आपको उसका विश्वास करना होता है। आपको उसके बताये मार्ग पर ही चलना होता है। यदि आप जंगल में होते हैं, और आपका मार्गदर्शक आपसे कहता है, "हमेन *इधर* जाना हैं," और फिर भी आप *दूसरे* मार्ग पर जाने की सोचते हैं, तो आप भटक जायेगे। और जब आप... परमेश्वर हमारे पास एक मार्गदर्शन करने के लिए एक मार्गदर्शक को भेजता है, तो हमें उसी का अनुकरण करना चाहिए। इससे कोई मतलब नहीं पड़ता कि हम क्या सोचते हैं, और क्या ठीक जान पड़ता है और क्या अजीब सा लगता है, यह सब करना हमारा कार्य नहीं हैं, यह सब केवल मार्गदर्शक का काम है।

31 पुराने नियम में, परमेश्वर ने जो भविष्यद्वक्ताओं को भेजा। वह मार्गदर्शक थे, क्योंकि परमेश्वर का वचन भविष्यवक्ताओ के पास आता है। वे मार्गदर्शक थे। वे लोगों का मार्गदर्शन करते थे जैसा हमने पिछली रात यशायाह और उज्रिय्याह को देखा। उन्हें निर्देश मिलता था, और वे लोगों को निर्देश दिया करते थे और उनका मार्गदर्शन किया करते थे। और अब परमेश्वर ने हमेशा ही अपने मार्गदर्शकों को भेजता है, ऐसा कभी नहीं होता कि उसका मार्गदर्शक यहां ना हो, इस धरती पर सभी कालो में से होते हुए। परमेश्वर का हमेशा ही कोई न कोई उसका प्रतिनिधी रहा है, सभी कालो में।

32 अब, कभी–कभी वे मार्गदर्शक को छोड़ देते हैं, जैसा कि हम इसे "उजियाले से दूर," होता कहते हैं। जब यीशु इस संसार में था, तो क्या आपको याद नहीं कि यीशु ने फरीसियों से कहा, "तुम अंधे मार्ग को दिखाने वालो"? अंधे मार्गदर्शक, आत्मिक चीजों के प्रति अंधे है। समझे? अब, उन्हें मार्गदर्शक होना चाहिए था, ताकि लोगों का मार्गदर्शन करके, उन्हें उद्धार तक ले जाते। परन्तु यीशु ने कहा, "तुम अंधे हो!" और उसने कहा, "उन्हें रहने दो, क्योंकि यदि अंधा अंधे को लेकर चलेगा, तो क्या वे दोनों गड्ढे में ना गिरेंगे? " अंधे मार्ग दिखाने वाले! ओह, यह संसार किस प्रकार से अंधेपन के मार्गदर्शन से खराब हो गया है। वह नहीं चाहता कि आप अपनी खुद की समझ पर विश्वास करें। परमेश्वर नहीं चाहता है कि आप अपनी समझ पर या अपने विचारों पर, या किसी भी मनुष्य के बनाए हुए विचारों पर निर्भर रहे।

33 परमेश्वर एक मार्गदर्शक को भेजता है, और परमेश्वर यह चाहता है कि

आप यह याद रखें कि वह उसका नियुक्त किया हुआ मार्गदर्शक है। और हमें उसे अवश्य ही याद रखना चाहिए। यहाँ यीशु यह कहता है, "मैं तुम्हें नहीं छोडूंगा, लेकिन मैं पिता से प्रार्थना करूंगा और वह तुम्हें एक सहायक भेज देगा।" और यह सहायक, जब इसे आना था, तो तुम्हें पूर्ण सत्य की ओर मार्गदर्शक करना था। और परमेश्वर का वचन सत्य है, और वचन मसीह है, "मैं ही मार्ग, सत्य और जीवन हूं।" वह वचन है, "आदि में वचन था, और वचन परमेश्वर के साथ था, वचन परमेश्वर था। और वचन देहधारी हुआ और हमारे बीच में रहा।" तब यदि हम सही सच्चे मार्गदर्शक के पीछे चले जो कि पवित्र आत्मा है, तो वह हमें वही बतायेगा जो उसने क्या देखा है, जो उसने सुना है, और वह हमें आने वाली बातें दिखायेगा। आमीन। वह आप है। वह आपको आने वाली चीजों दिखाने जा रहा है।

34 और आज जब कलीसियाये उसको अस्वीकार कर देती है, तो हम इस बात की आशा कैसे कर सकते हैं कि हम स्वर्ग में जायेगे? जबकि पवित्र आत्मा हमारे पास एक मार्गदर्श के लिए भेजा गया है, हम तो किसी कार्डिनल या किसी बिशप या किसी जनरल अध्यक्ष, या ऐसे ही किसी व्यक्ति को अपना मार्गदर्शन करने देते हैं, जबकि पवित्र आत्मा को हमारे मार्गदर्शन के लिए दिया गया है।

35 और पवित्र आत्मा सदा वचन से ही बोलता है। "मुझे अभी तुम से बहुत सी बातें कहनी हैं, जिन्हें तुम अभी नहीं समझ सकते हैं, परन्तु जब वह आयेगा, तो वह तुम्हारा मार्गदर्शन करेगा।" मोहरों के प्रकट होने का यही कारण है। सातवी मोहर के समाप्ति होने पर, परमेश्वर के रहस्य पूरे हो जाने चाहिए, यह जानना कि परमेश्वर कौन है, वह क्या है, वह कैसे रहता है, उसका स्वभाव, और उसका अस्तित्व। आपको तब तक *यहां* होना चाहिए किसी भी प्रकार से, समझे, कि हमें परमेश्वर के बेटे और बेटियों के पूरे डील–डौल तक ले आये, एक कलीसिया जो मसीह के लहू में धुली है, वह पैसो से नहीं खरीदी गयी है, यीशु मसीह के लहू के द्वारा उसका दाम चुकाया गया है।

36 अब, यहाँ हमारे पास, एक मार्गदर्शक है, और यह परमेश्वर के द्वारा दिया गया मार्गदर्शक है। अब, इस समय हम अपने मार्ग पर जंगल में से होकर निकल रहे हैं, और हम बिना उस मार्गदर्शक के पार नहीं हो सकते हैं। और क्या कोई इस बात का सहारा जुटा सकता है कि इस मार्गदर्शक

का कोई और विकल्प ले ले! यदि आप ऐसा करेगें तो वह आपको मार्ग से भटका देगा। यह मार्गदर्शक मार्ग को जानता है! वह इस मार्ग के चप्पे–चप्पे से परिचित है। वह आपके हृदय के हर एक विचार को जानता है। वह यहां उपस्थित हर व्यक्ति को जानता है। वह जानता है कि आप कौन हैं और आपने क्या किया है, और वह आपके विषय में सब जानता है। यह परमेश्वर का मार्गदर्शक पवित्र आत्मा है, और वह आप पर सब चीजें प्रगट करेगा, और आपको वही बताएगा जो सुनेगा, वह आपके शब्दों को दोहरा सकता हैं और बता सकता हैं कि आपने क्या कहा है। आमीन। आप क्या थे, कहां है, और कहां जा रहे हैं, वह बता सकता है। एक मार्गदर्शक, जो ठीक मार्गदर्शक है, और वह आपका मार्गदर्शन पूरे सत्य तक करेगा, और उसका वचन सत्य है।

37 अब, पवित्र आत्मा आपसे मनुष्य के बनाये मत–सिद्धांत पर कभी भी, "आमीन," कहने को नहीं कहेगा। वह तो केवल परमेश्वर के वचन पर ही "आमीन" के साथ पूर्ण विराम लगाने को कहेगा, क्योंकि वह ऐसा ही है। पवित्र आत्मा आपको किसी और मार्ग पर नहीं ले जायेगा। अब यह एक अजीब बात है, कि हम सब, हमारे हर बड़े संप्रदाय और दूसरे, इस बात का दावा करते हैं कि वे पवित्र आत्मा ही के चलाए चल रहे है, और उनमें आपस में ऐसी ही भिन्नता है जैसे दिन और रात में।

38 परन्तु जब वह छोटा फरीसी पौलुस, जिसने हनन्याह के द्वारा उसे बपतिस्मा देने पर पवित्र आत्मा को प्राप्त किया, और वह अध्ययन के लिए तीन वर्ष अरब को चला गया, और जब वह वापस आया, तो उसने कभी भी कलीसियाओ की सलाह किसी भी विषय में चौदह वर्षों तक नहीं ली थी, और जब वह आकर और पतरस से मिला, जो कि यरूशलेम में कलीसिया का अध्यक्ष था, तो वे मतो और सिद्धांत में एक थे। क्यों? एक ही पवित्र आत्मा था! जैसे पतरस यीशु मसीह के नाम में बपतिस्मा देता, तो पौलुस भी बिना किसी सलाह के बताए वैसे ही बप्तिस्मा देता। जहां पतरस ने पवित्र आत्मा के बपतिस्मे, और पवित्रीकरण, और इत्यादि के विषय में सिखाता तो, पौलुस भी वैसे ही किसी कलीसिया के सलाह बिना वैसे ही सिखाता, क्योंकि इनका एक ही मार्गदर्शक था। तो आज हम ऐसे कैसे हो सकते हैं जबकि लोग इन सत्यो का इन्कार कर रहे हैं? जब पतरस ने कलीसिया को एक मार्ग पर लाने के लिए सिखाया तो पौलुस ने भी उसी तरह का मत सिद्धांत सिखाया, क्योंकि दोनों का एक ही मार्गदर्शक था।

39 मार्गदर्शक ऐसा नहीं करता कि एक व्यक्ति को *इस* मार्ग पर, और एक को *उस* मार्ग पर, और एक को पूर्व और एक को पश्चिम में भेज दे। देखो, वह तो आपको एक साथ रखेगा। और यदि हम बस पवित्र आत्मा को हमें एक साथ रख लेने दें, तो हम एक ही होंगे। यदि—यदि हम शैतान को अपने को गलत मार्ग पर ना ले जाने दे, एक ही हृदय, एक ही विचार, एक सूत्र में होगे, तो हम एक ही आत्मा के द्वारा, पवित्र आत्मा के द्वारा, जो कि परमेश्वर का मार्गदर्शक है जो हमें पूर्ण सत्य की ओर ले जायेगा। यह सही है। लेकिन आपको अपने मार्गदर्शक का अनुकरण करना होगा। जी हां, श्रीमान।

40 निकुदेमुस को देखे, यदपी वह तेज था, फिर भी उसे एक मार्गदर्शक की आवश्यकता थी। वह लगभग अस्सी वर्ष आयू का गुरु था। वह फरिसियों में से था, या—या स्नेहदरीन काऊसिल ऑफ मिनिस्टरियल असोसिएशन से था। वह उनके महान व्यक्तियों में से एक था, इस्राएल में एक शिक्षक, इस पर एक गुरु था। सोचिए, पढ़ाने वाला गुरु! जी हां, वह व्यवस्था को जानता था, लेकिन जब नए जन्म की बात आयी, तो उसे एक मार्गदर्शक की आवश्यकता पड़ी। वह इसके लिए भूखा था। वह जानता था कि कहीं कुछ बात है। उस रात मसीह के प्रति उसके हाव–भाव ने इसे साबित कर दिया। इससे यह भी सिद्ध होता है, कि उन सब लोगों में किस प्रकार की भावना थी, परन्तु उनमें से किसी में भी वही—वही साहसिक आत्मा नहीं थी जो इसमें थी। वहां ऐसा कोई नहीं था जो इसकी तरह आकर और वही करता जो इसने किया। आप जानते हैं लोग, निकुदेमुस पर रात में आने के कारण उंगली उठाते हैं। वह किसी तरह भी पहुंचा। वह आ गया। मैं कुछ लोगों को जानता हूं जो रात या दिन में कभी नहीं शुरू कर सकते। लेकिन वह वहां गया, क्योंकि उसे मार्गदर्शक की आवश्यकता थी, और उसने कहा, "गुरु, हम," जो कि स्नेहदरीन है, "हम जानते हैं कि तू परमेश्वर की ओर से गुरु होकर आया हैं।" वह यह क्यों जानता था? क्योंकि वो प्रमाणित हुआ था। देखिए, वह जानना चाहता था कि यह नया जन्म क्या होता है, और वह सीधा सही व्यक्ति के पास गया, क्योंकि परमेश्वर ने प्रमाणित किया था कि यह यीशु ही मार्गदर्शक है। देखिए उसने क्या कहा, "रब्बी, हम जानते हैं कि तू परमेश्वर की ओर से गुरु होकर आया है, क्योंकि कोई व्यक्ति इन कामो को जो तू करता हैं, यदि परमेश्वर उसके साथ ना हो तो वह उन्हें कर नहीं सकता है।"

41 यह वहां एक प्रमाणित था, कि वहां जीवित परमेश्वर उसके अंदर था। उसने क्या गवाही दी, "यह काम मैं नहीं करता हूं; परन्तु पिता मुझ में रह कर यह करता है। मैं तुम से सच कहता हूं, कि पुत्र अपने आप से कुछ नहीं करता; परंतु जिस कामो को वह पिता को करते हुए देखता है, वह उन्ही कामो को उसी रीति से करता है। पिता काम करता है, और मैं यहां करता हूं।" दूसरे शब्दों में, परमेश्वर उसको दिखाता था कि क्या करना है, और तब वह जाकर और उस काम को वैसे ही कर देता था। वह किसी भी कार्य को तब तक नहीं करता था जब तक परमेश्वर ही उससे उस काम को करने को ना कहे। आमीन। यही इसकी खुली साफ सच्चाई है। अगर हम बस आगे बढ़ें और तब तक प्रतीक्षा करें जब तक आत्मा हमें ऐसा करने के लिए प्रेरित न करे! ऐसा ही है। और फिर मसीह में पूरी तरह से खो जाये तो ऐसे धक्का नहीं देना पड़ेगा जैसे मेरे साथ, लेकिन उसका पहला थोड़ा सा इशारा पाते ही आप तैयार हो जाते हैं और आपको कोई नहीं रोक सकता, क्योंकि आप जानते हैं कि यह परमेश्वर की इच्छा है।

42 उसे एक मार्गदर्शक की आवश्यकता थी। वह एक प्रमाणित किया हुआ मार्गदर्शक था। उसका मार्गदर्शन इसी के द्वारा हो सकता था क्योंकि वह जानता था कि यह मार्गदर्शक परमेश्वर की ओर से प्रेरित किया हुआ है। वह जानता था कि जो रीति–रिवाज जिनका पालन वह कर रहा है, और वह उसे फरीसी, सदूकियों से, और जो भी हो उन से मिले थे, उसने देखा जिन मतो धारणाओं का उसने पालन किया उससे कुछ नहीं हुआ। लेकिन यहाँ एक व्यक्ति दृश्य पर आता है, और बाईबल का एक प्रतिज्ञा किया हुआ मसीहा कहलाता है। और वह मुडकर और परमेश्वर के उन्हीं कामों को करता है। यीशु ने कहा, "यदि मैं अपने पिता के कार्य ना करूं, तो मेरा विश्वास मत करो। लेकिन यदि तुम मेरा विश्वास नहीं कर सकते हो, तो जो कार्य मैं करता हूं उनका विश्वास करो, क्योंकि वही मेरी गवाही देते हैं।"

43 तब, उसमें अचरज नहीं है कि निकुदेमुस यह कह सका था, "रब्बी, हम जानते हैं कि तू परमेश्वर की ओर से गुरु होकर आया हैं, क्योंकि कोई व्यक्ति यह कार्य नहीं कर सकता यदि परमेश्वर उसके साथ ना हो।" देखा, यद्यपि वह इन बातों में गुरु था, तौभी उसे एक मार्गदर्शक की आवश्यकता थी। वह अपने कलीसिया में शिक्षक था। वह सम्मानित व्यक्ति था, और उसका—उसका एक अपना स्थान था, और वह एक महान व्यक्ति था;

इसमें संदेह नहीं, कि उसका सामान उसके राष्ट्र के लोगों में था। परन्तु जब नया जन्म लेने का विषय आया, तो उसे एक मार्गदर्शक की आवश्यकता पड़ी! तो क्या हमें भी है, जी हाँ, हमें भी एक मार्गदर्शक की आवश्यकता है।

44 कुरनेलियस, एक महान सम्मानित व्यक्ति था। उसने कलीसियाये बनायी थी। वह यहूदियों का सम्मान करता था क्योंकि वह जानता था कि उनका धर्म सही है। और वह दान करता था, और प्रतिदिन प्रार्थना करता था, लेकिन जब पवित्र आत्मा आया तो (तो कलीसिया में कुछ विशेष उन्नति हुयी), उसे एक मार्गदर्शक की आवश्यकता पड़ी। परमेश्वर ने उसके पास पवित्र आत्मा भेजा। उसने उसे एक व्यक्ति पतरस में होकर भेजा, "जब पतरस इन वचनों को बोल ही रहा था, पवित्र आत्मा उन पर उतर आया।" [टेप पर खाली स्थान—सम्पा।] परमेश्वर ने मार्गदर्शक को पतरस के द्वारा प्रयोग किया। उसने उसका प्रयोग किया, क्योंकि उसने कुरनेलियस को सही मार्ग दिखाया। और जब वह बोल ही रहा था, तो पवित्र आत्मा उन अन्यजातियों पर उतर आया। तब उसने कहा कि, "क्या मनुष्य पानी को रोक सकता है, कि इनका बपतिस्मा ना हो? " देखिए, अब भी मार्गदर्शक बोल रहा है, ना कि पतरस। क्योंकि वह तो यहूदियो... या अन्यजातियों का झुंड था, जो कि उसके लिए "अपवित्र, गन्दे" थे, और वह तो वहां जाना भी नहीं चाहता था। परन्तु मार्गदर्शक ने कहा, "मैं तुझे भेज रहा हूं।" जब आप मार्गदर्शक के पूरे नियंत्रण में होते है, तो आप वह कार्य करते है जो आप करना नहीं चाहते, जब आप उसे मार्गदर्शन करने देते है। ओह, पवित्र आत्मा के मार्गदर्शन में चलना कितना अच्छा है। वह मार्गदर्शक है। तो ठीक है। उसने पतरस के द्वारा बताया कि उसे क्या करना चाहिए। फिर जब उन सब ने पवित्र आत्मा पाया, तो कहने लगा, "हम पानी को नहीं रोक सकते, क्योंकी यह देख कर कि इन्होने भी हमारी नाई वैसे ही पवित्र आत्मा पाया जैसे हमने शुरू में पाया था।" और तब उन्होंने उन्हें प्रभु यीशु के नाम में बपतिस्मा दिया। अब, यह करने के लिए किसने उनकी अगुवाई की? उस मार्गदर्शक ने जो उसके अन्दर था। क्या यीशु ने उन्हें नहीं बताया कि, "कोई विचार ना सोचना कि तुम्हे क्या कहना हैं, क्योंकि यह तुम नहीं बोल रहे हो; यह पिता है जो तुम में रहता है, वो बोल रहा है"? आमीन।

45 वो खोजा, तो येरूशलेम से आ रहा था। और उस समय पर, संसार में परमेश्वर का मार्गदर्शक पवित्र आत्मा था, और उसके पास वहां एक व्यक्ति

था जो कि मार्गदर्शक से भरा हुआ था। वह तो केवल डीकन जैसा था, वह तो प्रचारक भी नहीं था। और वह वहां बीमारों को चंगा कर रहा था और प्रेत आत्माये निकाल रहा था, और जिस कारण उस नगर में एक बड़ा हर्ष उल्लास था। उसके चारो ओर सैकड़ों लोग घिरे रहते थे, और मार्गदर्शक ने कहा, "बहुत हुआ, अब इस रास्ते पर वापस चलते है।" उसने अपने मार्गदर्शक से तर्क– वितर्क नहीं किया।

46 कभी भी अपने मार्गदर्शक के शब्दों पर तर्क–वितर्क ना करें। केवल उसका अनुकरण करें। यदि आप ऐसा नहीं करेगे, तो आप खो जायेगे। और, याद रखिए, यदि आप खो जायेंगे, तो आप स्वयं ही कारण हैं, इसलिए हम मार्गदर्शक के साथ रहना चाहते हैं।

47 सो आगे रास्ते में, उसने कहा, "फिलिपुस, अब इस झुंड को छोड़ कर, और रेगिस्तान में चले जाओ जहां कोई भी नहीं है। लेकिन मैं तुम्हें वहां भेज रहा हूं, और जब तुम वहां पर पहुंचोगे तो वहां कोई होगा।" देखो एक खोजा अकेला चला आ रहा था, वह इथोपिया की रानी के यहां एक महान व्यक्ति था। और वह यशायाह नबी की पुस्तक पढ़ता हुआ चला आ रहा था। और तब मार्गदर्शक ने कहा, "उसके रथ के पास हो ले।"

और उसने कहा, "क्या तू जो पढ़ता है उसे समझता है? "

48 उसने कहा, "मैं भला कैसे समझ सकता हूं जब कि कोई मेरा मार्गदर्शन करने वाला ही नहीं है? " ओह, प्रभु! परन्तु फिलिपुस के पास मार्गदर्शक था। आमीन। और उसने उसी वचन से आरंभ करके, और उसे मसीह का प्रचार कर दिया। आमीन। मार्गदर्शक! उसने उसे कोई धार्मिक मत नहीं बताया, उसने केवल मसीह, मार्गदर्शक के विषय में बताया! और उसने उसे वहीं कहीं पानी में बपतिस्मा दिया। जी हां, ऐसा ही हुआ था। ओह, मैं उसे कितना प्रिय जानता हूं!

49 निर्गमन 13:21 में, जब इस्राएल ने प्रतिज्ञा के देश के लिए मिस्त्र छोड़ा, परमेश्वर जानता था कि इससे पहले इन्होने इस मार्ग पर कभी भी इस तरह से यात्रा नहीं की है। वह केवल चालीस मील था, लेकिन फिर भी आवश्यकता थी कि उनके साथ कोई जाता। नहीं तो मार्ग से भटक जायेगे। इसलिए परमेश्वर ने मार्गदर्शक को भेजा। निर्गमन 13:21 में, ऐसा ही कुछ है, "मैं अपना दूत आग के खंभे के रूप में तुझे मार्ग में बनाये रखने के लिए," उस प्रतिज्ञा वाले देश के लिए तेरे आगे भेज रहा हूं। और इस्राएल

के लड़के वालो ने उस मार्गदर्शक, आग के खंभे का (रात में), दिन में बादल के रूप में अनुकरण किया। जब वह रुकता, तो सब रुक जाते। जब वह चलता तो वे चल पड़ते। और जब वह उस देश के पास आये, परन्तु उस देश के योग्य ना ठहरे, तो वह उन्हें वापस जंगल की ओर फिर से ले गया। वह उनके साथ नहीं जायेगा।

50 यही आज आज कलीसिया में है। लेकिन कोई शक नहीं, कि आज परमेश्वर कितना धैर्य रखे हुए है, जैसा कि यह नूह के दिनों में था, कलीसिया मानो ऐसी चल रही है जैसे वह अपने को बिल्कुल ठीक कर के सही रास्ते पर हो। इसलिए उसे हमें गोल–गोल और गोल–गोल और गोल–गोल ले जाना ही है।

51 इस्राएल को थोड़ा मालूम था, वे जयजयकार कर रहे थे, जब वे मिस्र के सिपाहियों को मरते हुए देख रहे थे, और फिरौन के रथो घोड़ो को सागर में उल्टा डूबते देखा था, तो उन्हें विजय मिली थी, मूसा आत्मा में था, आत्मा में गा रहा था, मरियम आत्मा में नाच रही थी, और इस्राएल की कुमारियां उस किनारे पर इधर–उधर खूब नाच रही थी और चिल्ला रही थी, क्योंकि अब तो उस दूध और शहद से कुछ ही दिनो की दूरी पर थे। उनके थोड़े से बडबड़ाने से वह चालीस वर्ष दूर हो गए, क्योंकि उन्होंने उस मार्गदर्शक पर जो कि परमेश्वर था बुड़बुड़ाना शुरू कर दिया था।

52 और हम भी अपने आप को इसी तरह पाते हैं। इसके बाद मैं शेवरेपोर्ट जाऊंगा। और पचास वर्ष पहले, लुइसियाना में—में धन्यवाद देने के दिवस पर पवित्र आत्मा उतरा, धन्यवाद देने के दिवस पर। उस समय से कलीसियाये कितनी गिर गई है! क्या आप महसूस करते हैं कि रोमन कैथोलिक कलीसिया इसके आरंभ में पेंटीकोस्टल कलीसिया थी? यह सत्य है। यह सही है। यह एक एक पेंटीकोस्टल कलीसिया थी, लेकिन वे बड़े–बड़े जिद्दी लोग इसमें आ गए और उन्होंने परमेश्वर के उन—उन वचनों को अपने रीति–रिवाजों से बदल दिया था, उसमें अपने मत सिद्धांत मिला दिए। और अब उनके पास कुछ नहीं दिखाई पड़ता, उनके पास जरा सा भी वचन नहीं बचा। उन्होंने पवित्र आत्मा के स्थान पर रोटी का टुकड़ा ले लिया, किसी चीज की जगह कुछ और ही ले लिया। उन्होंने डूबने की जगह पर छिड़काव कर दिया। उन्होंने "प्रभु यीशु मसीह" की जगह "पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा" ले लिया। उन्होंने परमेश्वर की भविष्यवाणीयो के

स्थान पर जो हमारे लिए रखी थी कुछ और ले लिया, और वे वचन की शिक्षा से दूर, बहुत दूर, बहुत दूर हटते चले गए।

53 और पचास वर्ष पहले, लूइसियाना में पेंटीकोस्ट हुआ, और यदि यह और दो सौ वर्ष और रहे, तो यह कैथोलिक कलीसिया से भी बहुत दूर चले जायेंगे, यदि यह इसी प्रकार गिरावट में चलते रहे जैसे पचास साल से चल रहे है, क्योंकि वह हर समय, कुछ ना कुछ उसमें बराबर मिलावट कर रहे हैं। पुराने तरह के प्रचारक समाप्त हो गए हैं। अब सड़को पर एक भी बेदारी सभाये सुनने में नहीं आती। अब हर चीज जो हमारे पास है, वह हॉलीवुड की चीजों से मिश्रित है, बाल कटी स्त्रियां जो छोटे–छोटे कपड़े पहनती है, रंगी हुई है, और बाकी सब कुछ करती है, अपने आप को मसीही कहती है। कुछ छोटे रिकी या आवारा गिटार लेकर, इधर–उधर स्थानो में भागते फिरते है, और वह स्त्रियां ऐसे शरीर से चिपके कपडे पहने होती है जैसे... केवल वो—वो खाल ही ऊपर दिख रही हो और कपड़े ना हो, लगभग, मंच पर इधर–उधर हिलते–डुलते, मंच पर ऊपर और नीचे दौड़ते हुए, नीचे की ओर लटकते हुए कान के झुमको के साथ नाचती है, और यहां न्यू लेडी लेंड के फैशन के बाल कटवा कर अपने आप को मसीही कहती है।

54 आज हमें पुराने तरह के परमेश्वर के भेजे हुए लोग चाहिए, एक धधकता हुआ धर्म जो कलीसिया में से सारी दुनियादारी को बाहर कर दे। हमें आवश्यकता है कि हम पवित्र आत्मा की आग के पास वापस आये, उसके पास आये जो हर गन्दे भाग को जला दे, उस पुराने प्रचार के ढंग को वापस लाये, स्वर्ग को ऊँचा उठाये, और नरक को धधका दे, बंदूक की नाल सीधी करे। हमें इस प्रकार का एक प्रचार चाहिए। लेकिन आज आप ऐसे करते हैं, कि आपकी सभा आपको वोट करे।

55 कभी–कभी परमेश्वर के प्रचारक अपने कलीसिया के लोगो के द्वारा भटक जाते हैं। यही कारण है कि मेरा कोई संप्रदाय नहीं है। मेरा मुख्यालय ऊपर स्वर्ग में है। जहां कही वह मुझे भेजेगा, मैं जाऊंगा। जो वह कहेगा, मैं कहूंगा। हम कोई संप्रदाय नहीं चाहते हैं। यह कलीसिया कभी नामधारी की बात करेगा तो अपने पास्टर को खो देगा। मैं इसके इर्द–गिर्द एक पांच मिनट भी नहीं रुकूंगा। कोई भी कलीसिया जो संप्रदाय में बदलते ही वापस बीज बन गयी, और मुझे एक भी ऐसी कलीसिया बताईये कि एक कभी फिर से ऊपर उठी। पवित्र आत्मा को कलीसिया के मार्गदर्शन के लिए भेजा गया

है, ना कि कुछ लोगों के झुण्ड को। पवित्र आत्मा सम्पूर्ण बुद्धी है। मनुष्य ही ढीठ, और बदल जाता हैं।

56 परमेश्वर ने कहा कि वह एक मार्गदर्शक भेजेगा, और वह उन्हें मार्ग पर ले चलेगा। और जब तक वह आग के खंभे के पीछे–पीछे चलते रहे, वह ठीक रहे। वह उन्हें लेकर प्रतिज्ञा किए देश के दरवाजे तक लाया, और फिर भी वह उससे उतनी ही दूर रहे। तब यहोशू, जो कि महान योद्धा था, उस दिन को याद कीजिए, जब उसने लोगो से कहा, "अपने आप को पवित्र करो, तीसरे दिन परमेश्वर यर्दन को बीच से खोल देगा और तब हम पार जायेगे"? अब देखिए उसने क्या कहा (मुझे यह बहुत पसंद है) पवित्र शास्त्र में, उसने कहा, "वाचा के संदूक के पीछे रहो, क्योंकि तुम इस मार्ग से होकर पहले नही गये हो।"

57 वाचा का सन्दूक क्या है? वचन। अब अपने संप्रदाय के रास्तो पर मत जाओ, वचन के ठीक पीछे बने रहो, क्योंकि तुम इस रास्ते से होकर कभी नहीं गुजरे हो। और, भाईयो, यदि कभी ऐसा समय हुआ था कि मसीही कलीसिया अपने को जांचे, तो ये ठीक अभी है। अब हम ठीक वहीं है जहां एक महान सभा रोम में ठीक इस समय चल रही है, मतभेद मिटाये जा रहे है, कलीसियाओ का संघ बनाया जा रहा है, जहां यह सारे संप्रदाय एक संघ में मिलते जा रहे हैं कि उस पशु की मूरत को बनाये, बिल्कुल वैसे ही जैसे बाईबल कहती है। और आप जानते है हमने आज प्रात: संदेशो में क्या कहा था। और अब हम उस स्थान पर हैं, जब सारी चीजें पूरी होने को है, और लोग अब भी अपने ही मत–सिद्धांत के अनुसार चल रहे हैं। अच्छा होगा कि आप वचन के पीछे ही स्थिर रहे! वचन ही आपको पार लगायेगा, क्योंकि वचन मसीह है, और मसीह परमेश्वर है, और परमेश्वर पवित्र आत्मा है।

58 जी हाँ, श्रीमान! आप केवल वचन पर ही बने रहे! अपने मार्गदर्शक के साथ बने रहे। बिल्कुल उसके पीछे रहे। उसके आगे न जाये, आप इसके पीछे बने रहे। इसे आपका मार्गदर्शन करने दो, आप इसका मार्गदर्शन ना करें। उसे आगे चलने दे।

59 यहोशू ने कहा, "अब, तुम इस मार्ग से पहले कभी नहीं गुजरे हो, तुम मार्ग के विषय में कुछ भी नहीं जानते हो।"

60 आज यही कठिनाई है। आपको किसी मार्गदर्शक की कोई आवश्यकता

नहीं है कि वह आपका मार्ग दर्शन उस चौड़े रास्ते पर करे। ओह, तुम हर सकरे मार्ग को जानते हो और सब समझते हो। तुम पाप करने के सारे मार्ग जानते हो। वहां नहीं... ओह, तुम ऐसी हालत में काफी समय से हो। आपको आवश्यकता नहीं है कि कोई आपको बताने का यत्न करे, आपको सारे शॉर्टकट मालूम हैं। यह ठीक है, कि आप हर एक पाप के विषय में जानते हैं। किसी को यह बताने की आवश्यकता नहीं कि चोरी कैसे की जाती है; आप यह जानते हैं। किसी को यह बताने की आवश्यकता नहीं कि श्राप कैसे दिया जाता है; आप स्वयं जानते हैं। किसी को भी आपको यह बताने की आवश्यकता नहीं कि बुरे काम कैसे किये जाते है, क्योंकि यह तो हर जगह हर वृक्ष तक पहुंच चुके है।

61 लेकिन, आप मसीही लोगो याद रखे, कि इनसे पार हो गये है। आप एक नए देश में है। आपका नया जन्म हुआ है। आप एक देश में है, एक स्वर्गीय देश में। आप प्रतिज्ञा किए हुए देश में हैं।

62 आप जहां भी चाहे जा सकते हैं, आप तो सारे रास्ते जानते हैं। ओह, प्रभु, जी हाँ। आप जानते हैं मौके पर, क्या—क्या, किस तरह के पत्तों के साथ खेल में टिके रहना है।" आप जानते हैं जब खेलने वाला पासा फेंकता है, तो उसका क्या मतलब है, और इस तरह की हर एक चीज। परन्तु जब पवित्रता और धार्मिकता और परमेश्वर की सामर्थ जानने की बात आती है, और पवित्र आत्मा कैसे काम करता है और यह क्या करता है, तो अच्छा होगा कि आप ठीक वचन के पीछे स्थिर रहे, जो कि मार्गदर्शक है। समझे? आप इस मार्ग से होकर पहले कभी नहीं निकले हैं।

63 ठीक है, आप कहते हैं, "मैं तो बहुत समझदार व्यक्ति था, मेरे पास—मेरे पास तो विद्यालय की डिग्रियां है।" अच्छा होगा कि आप उन्हें भूल जाये। जी हां, श्रीमान।

64 "मैं धर्म विद्यालय से होकर गया हूं।" अच्छा होगा कि आप इसे भूल जाये। जी हां। अच्छा होगा कि आप अपने मार्गदर्शक के पीछे रहे। उसे मार्गदर्शन करने दे। वह मार्ग को जानता है; आप नहीं जानते। आप पहले कभी इस मार्ग से नहीं निकले हैं। "ठीक है," आप कहते हैं, "वे निकले है।"

65 देखिए यदि वह निकले है। यीशु ने कहा, "वे जो इस मार्ग से निकले है, उनके यह चिन्ह होंगे। मेरे नाम से, वे दृष्ट आत्माओं को निकालेंगे, भिन्न–

भिन्न भाषा बोलेंगे; या वे सांप को भी उठा ले, या जहरीली वस्तु भी पी ले, तो उनकी कोई हानि नहीं होगी। यदि वे उनके हाथों को बीमार पर रखेंगे, और वे चंगे हो जाएंगे।" उनमें से बहुत मना करते है, इसका इन्कार करते हैं, कहते हैं कि यह प्रेरणा से है ही नहीं। वह मार्गदर्शक के पीछे नहीं चल रहे हैं। वे मनुष्य के बनाए हुए मतो पर चल रहे हैं। आप के लिए उचित यही होगा कि आप वचन के पीछे चले, क्योंकि आप इस मार्ग से पहले नहीं गए हैं, क्या आप यह जानते हैं।

66 लेकिन आप तो नया जन्म प्राप्त किए हुए है, और आप पवित्रता में उत्पन्न हुए हैं। आप इस मार्ग से नहीं निकले हैं। आपने... यदि आप निकले हैं, तो आपको पवित्रता में से होते हुए आना है, क्योंकि यह तो नया देश है, एक नया जीवन हैं, एक नए लोग है।

67 आप कलीसिया में आयेंगे और आप किसी को खड़ा हुआ, "परमेश्वर की महिमा होवे! हाल्लेलुय्या!" जोर जोर से कहते हुए सुनेगे

68 क्यों, आप कहेंगे, "ओह, मेरे प्रभु, ऐसा तो हमारे कलीसिया में कभी नहीं हुआ! तो मैं तो उठकर और यहां से चलता हूं!" उम–हूंम। देखिए? सावधान रहिए।

69 वचन के पीछे बने रहिए, अब, मार्गदर्शक को मार्गदर्शन करने दीजिए। "वह आपको पूर्ण सत्य को पहुंचायेगा, और इन बातों को प्रकट करेगा जिनके बारे में मैंने तुमसे बात की है। वह आपको उसे दिखायेगा। वह आपको उन बातों को बताएगा जो आने वाली है," एक सच्चा मार्गदर्शक है। बिशप के पास नहीं; वरन मार्गदर्शक के पास जाईये। किसी और के पास नहीं परन्तु केवल मार्गदर्शक के पास जाए। यही वह एक है जिसे आपके मार्गदर्शन के लिए भेजा गया था। यही है वो जो यह करेगा। परमेश्वर ने आपको एक मार्गदर्शक प्रदान दिया है। परमेश्वर के ही दिए गए मार्ग को ले।

70 आज कठिनाई यह है, कि लोग जो कलीसिया में आकर बस थोड़ी देर बैठते हैं, कुछ तो ऐसा होता है कि जिसके वे आदि नहीं होते हैं।

71 मैं उस स्त्री की जो कि ठंडी कहलाने वाली कलीसिया से आयी है जिसके लिए अभी प्रार्थना हुयी है सराहना करता हूं। परमेश्वर उस छोटी स्त्री को चंगा करने जा रहा है। वह यह नहीं समझती थी। वह इस विषय में कुछ नहीं जानती थी। वह अंदर आई, उसने कहा वह कुछ नहीं जानती। लेकिन मैंने उससे कहा कि, "वह आकर और मुझसे मिले।" वह तो एक

तरह से डरी हुई और पिछड़ी सी थी, लेकिन मार्गदर्शक उसे बताता ही रहा कि, "आगे बढ़ती रहो।" वो समझ गयी। ऐसा ही है। देखा, क्योंकि यह तो पवित्र आत्मा ही है जो हमारा इन बातों के लिए मार्गदर्शन करता है। देखिए, परमेश्वर का अपना प्रदान किया हुआ मार्ग है।

72 क्या आपने कभी... क्या आपने ध्यान दिया है कि जंगली हंस ऊपर की ओर जा रहे हैं, बत्तखें दक्षिण की ओर जाती हैं? तो ठीक है, अब याद रखे, कि वह छोटी बूढ़ी बत्तख भी वहीं कही तालाब में जन्म लेती है। उसे पूर्व, उत्तर, पश्चिम और दक्षिण नहीं मालूम होता है। उसे कुछ नहीं पता और वह जलाशय वहां कनाडा के पहाड़ों में होता है। वह कभी भी अपने तालाब के बाहर नहीं गया, लेकिन वह जन्म से ही अगुवा होता है। वह छोटी बत्तख पैदा ही अगुवा बनकर होती है। और पहली बात, एक रात जब भारी बर्फ वहां पहाड़ों की चोटी के आसपास गिरती है। तब क्या होता है? वह ठंडी हवा का झोखा वहां पार होता हुआ नीचे आता है। मैं उसके काँपते हुए कल्पना कर सकता हूं और जैसे कह रहा हो, "मां, इस सब का क्या मतलब है? " देखिए, उसने ऐसी ठंड पहले कभी भी नहीं देखी। वह चारों ओर देखता है, उसने तालाब के किनारे पर ध्यान देना आरंभ किया, ये जमने लगता है, तालाब पर बर्फ आ रही है। वह नहीं जानता, लेकिन अचानक से... वह बत्तखों के झुंड के लिए एक मार्गदर्शक बनकर ही पैदा हुआ था। जब उसके अन्दर ऐसा होता है तो एकदम तालाब के ठीक बीच में आ जाता है। आप उसे क्या कहेगे जो भी चाहे। हम उसे प्रेरणा कहते हैं, या आप उसे मूल प्रवृत्ति या, ओह, बस सहज ज्ञान, जो भी कह सकते है। और वह तालाब के ठीक बीच में पहुंच कर अपनी आवाज करना शुरू करता है जो कि हवा में फैलती जाती है, और ऐसा करती है, "होक–होक, होक–होक!" और तालाब की सारी बत्तखे उसके पास जमा हो जाती है। क्यों? वह अपने मार्गदर्शक को पहचानती हैं, जिस तरह से वह होक की आवाज करता है।

73 "यदि तुरही का शब्द साफ न हो तो कौन अपने को लड़ाई के लिए तैयार करेगा? " यह ठीक है। कौन अपने आप को लड़ाई के लिए तैयार करेगा यदि तुरही सही साफ आवाज न दे?

74 तो ठीक है, यदि उस छोटी बत्तख की आवाज साफ ना हो, तो कौन अपने को उड़ान भरने के लिए तैयार करेगा? वह छोटी बूढ़ी बत्तख अपनी

छोटी सी चोंच ऊपर हवा में करके अपना, "होंक–होक, होक–होक," का शब्द करती है! और सारी बत्तखे उसके पास जमा हो जाएगी। वह "होक–होक, होक–होक!" करके कहेगी वे यहाँ हैं। उनके पास ऐसी ही एक जुबली होगी, ठीक वहां तालाब के बीच में, बार–बार और बार–बार और बार–बार होती जाती है। कुछ समय बाद जब उसे ऐसा महसूस होने लगता है, कि उसे यह सब छोड़ना है। तब वह अपने छोटे–छोटे पंखों को तैयार करेगा और वह फड़फड़ा कर उस तालाब को छोड़ देता है, और हवा में उठकर वह उसके चार या पांच चक्कर लगाता है, और फिर बिल्कुल सीधा–सीधा लुइसियाना की ओर चल देता है, हर एक बत्तख ठीक उसके पीछे–पीछे होती है। "होक–होक, होक–होक," की आवाज करता हुआ यहां आता है। क्यों? वह एक मार्गदर्शक है! आमीन! बत्तखे अपने मार्गदर्शक को जानती है, लेकिन कलीसिया नहीं जानती। जी हाँ, वह जानता है कि क्या करना है।

75 आप उन बड़ी बत्तखो को जो अलास्का से आती है देखो। अब, एक बूढ़ा हंस हमेशा उनका नेतृत्व करता है, और उन हंसों को उस हंस पर बहुत अच्छे से नजर रखना पड़ता है। उनको मालूम रहता है कि वह मार्गदर्शक बड़ी बत्तख क्या कह रही है। क्या आपने यहाँ लगभग चार वर्ष पहले *लुक* पत्रिका में नहीं पढ़ा, कि वह बड़ी नर बत्तख नहीं समझ सकी कि उसको क्या करना है? और वह उस हंस के झुण्ड को लेकर इंग्लैंड पहुँच गयी। यह सही है। वे इससे पहले कभी भी इंग्लैंड नहीं आये थे। क्यों? उन्होंने अपने—उनके मार्गदर्शक पर कभी ध्यान नहीं दिया। वह बड़ी नर बत्तख नहीं जानती थी कि वह कहां जा रही है। और अब जब वह वहां पहुच गए तो वापस नहीं आ सकते है।

76 आज इन बड़ी बत्तखो के साथ भी यही मामला है, आज भी वही बड़ा झुंड हैं। वह कहते हैं, कि *लुक* पत्रिका कहती है, कि वह ये हंस झुंड और इंग्लैंड में चारो ओर उड़ती हैं, लेकिन वह यह नहीं जानती कि वापस कैसे जाया जाये। बहुत सी *बत्तखो* को जिन्हें मैं जानता हूं उसके साथ यही समस्या है। आपके भी बड़े झुंड में है, और संतुष्टी के लिए बड़ी–बड़ी सभाये करते है, और कोई बेदारी वाला प्रचारक आकर और प्रचार करता हैं, पर आप यह नहीं जानते कि आप कहां जा रहे हैं। और आप लोग चारो ओर से जमा होते हो, क्योंकि आपके बीच में एक नर बत्तख है जो आपको नामधारी गिरजो से तो बाहर निकाल लाया है; और परमेश्वर के वचन और पवित्र

आत्मा के बपतिस्मे पर नही लाया। और तब उन्हें लगता हैं कि हमारे समय में बेदारी क्यों नहीं आ रही है। उम–हूंम। समझे? आपको यही निश्चित आवाज को सुनना है! वह आवाज सुसमाचार की तुरही है जो परमेश्वर के सुसमाचार के हर एक वचन को पा रही है। कोई मत–सिद्धांत नही, कोई संप्रदाय नहीं; केवल बाईबल, पवित्र आत्मा। "और विश्वास करने वालो के यह चिन्ह होंगे।" समझे? और वह उसी मार्ग पर चलते हैं।

77 एक बार एक नर बत्तख ने जब वह अपने झुण्ड को अन्धकार में से उड़ाने की कोशिश कर रहा था, स्वयं भी नहीं जानता था कि वह कहां जा रहा हैं, और वह सारे के सारे पहाड़ से टकरा गये, और कुछ वहीं पर मर गए, और बर्बाद हो गए। निश्चय ही! उनको सही आवाज मालूम होनी चाहिए थी। यदि उस बत्तख को सही आवाज मालूम होती और हर कोई उसको जानता, तो उनके छोटे झुण्ड की जुबली होती और वे वहां दक्षिण में होते। वे वहां किस लिए जाते हैं? जहां ठंड नहीं होती।

78 अब, यदि परमेश्वर बत्तखो को इतनी समझ को देता है कि वह ठंड से बच सके, तो वह कलीसिया को कितनी समझ देना चाहिए? यदि एक बत्तख के पास इतनी ज्ञान प्रवृत्ती हो सकती है, तो पवित्र आत्मा के विषय जो कि कलिसिया में है कितनी होगी? इसे तो पुराने रीति–रिवाजों और धार्मिक मतो से निकाल कर हमारा मार्गदर्शन पवित्र आत्मा के महिमामय, अद्भुत बपतिस्मे में करना चाहिए। जहां पर ये सद्गुण, ज्ञान, धीरज, भक्ति और पवित्र आत्मा को लाता है। यही मार्गदर्शक हमें वही ले चलेगा, क्योंकि वह सुसमाचार के अतिरिक्त और कुछ नहीं फूंकेगा, जो कि परमेश्वर का वचन है। निश्चय ही, आपको एक मार्गदर्शक की आवश्यकता है!

79 जब, वह ज्ञानी पुरुष, वे परमेश्वर के विषय में कुछ नहीं जानते थे। वे—वे तो तंत्र–मंत्र दिखाने वाले, जादूगर थे। वे तो पूर्व में थे। आप जानते हैं, बाईबल बताती है, "हमने उसका तारा पूर्व में देखा है, और उसको दण्डवत करने आए हैं।" वे पश्चिम के थे, उन्होंने पूर्व दिशा की ओर देखा और उसका तारा दिख पड़ा... या पश्चिम में देखा, क्योंकि वे पूर्व में थे। "हम पूर्व में थे, और उसका सितारा पश्चिम में दिखाई दिया।" समझे? "हमने उसका सितारा पूर्व में देखा।" और, देखो, वे पूर्व में थे। "जब हम पूर्व में थे तो हमने उसका सितारा देखा, और उसको दण्डवत करने आए हैं।"

80 मैं कल्पना में उन लोगों को जाने की तैयारी करते देख सकता हूं। मैं

कल्पना कर सकता हूं कि उनकी पत्नियों में से एक ने उससे कहा, कहा, "कहो, कि तुमने सब चीजे तो रख ली है, लेकिन तुम्हारी दिशा सूचक घड़ी कहां है? "

उसने कहा, "इस बार मुझे—मुझे उसकी आवश्यकता नहीं है।"

81 कहा, "अरे तो फिर तुम पहाड़ों को कैसे पार करोगे? " याद रखिए, उन्हें टिगरिस नदी को पार करके और तब मैदान पार करने थे, और... क्यों, उनकी यात्रा को दो वर्ष लगे, ऊंटों पर। वह इसे कैसे करने जा रहे है? कहा, "जबकि, तुम अपनी दिशा सूचक भी नहीं ले जा रहे हो।"

उसने कहा, "नहीं।"

"तो तुम कैसे जा रहे हो? "

82 "मैं परमेश्वर के बताये रास्ते से जाऊंगा। वह सामने सितारा मेरी अगुवाई करके मुझे राजा के पास ले जा रहा है।" ऐसा ही है।

83 "हमने उसका सितारा पूर्व में देखा है, और सारे रास्ते उसका पीछा करते यहां पश्चिम में उसे दण्डवत करने आये है। वह कहां है? " उन्होंने परमेश्वर के दिखाए मार्ग का पालन किया। वे वहां पर आकर एक संप्रदाय के झुण्ड से थोड़ी देर के लिए बंध गए। वे यरुशलेम में आकर और इधर–उधर सड़को पर आकर, अच्छे कपड़े पहने हुए उन लोगो से पूछने लगे, "वो कहाँ है? वह यहूदियों का राजा कहां पैदा हुआ है? " तो, वह यरूशलेम ही मुख्य नगर था। अवश्य ही उस बड़ी कलीसिया को उसके विषय में मालूम होगा। "वह कहाँ है? वह यहूदियों का राजा जो उत्पन्न हुआ है वह कहां है? हमने उसका सितारा पूर्व में देखा है, हम उसको यहां दण्डवत करने आये हैं। वह कहां है? "

84 क्यों, वे याजक *फलां–और–फलां* और महायाजक *अमुक–और–अमुक* के पास गए, परन्तु उनमें से कोई भी इसके विषय में कुछ नहीं जानता था। "क्यों, वह यहूदियों का राजा जो पैदा हुआ है, वह कहाँ है? " वे नहीं जानते थे।

85 लेकिन वहां चरवाहों का झुण्ड था जो वहां पहाड़ो पर वे अच्छा समय बीता रहे थे, जी हां, श्रीमान, क्योंकि वे परमेश्वर के दिए गए मार्ग से आए थे।

86 सो वे वहां रुके हुए थे, और तब उसने उनसे सीधे कहा कि, "मैं आपको बताऊंगा कि हमें क्या करना चाहिए, हमें एक बोर्ड की सभा करनी चाहिए।" इसलिए उन्होंने महासभा में बुलाया और—और सोचा क्या उन्होंने इसके विषय में कुछ सुना है। "नहीं, हम उसके बारे में कुछ नहीं जानते है।"

87 आज भी बिल्कुल ये वैसा ही है। वे मार्गदर्शक के विषय में कुछ नहीं जानते, कि यह पवित्र आत्मा जो चंगा करता है, भर देता है, बचाता है, फिर से आ रहा है। मार्गदर्शक ने हमें बताया है कि यह चीजें जो घटित हुई, हम यहां ठीक उनके बीच में हैं। ह्रदय के विचारों को परखने वाला; वे उसके बारे में कुछ नहीं जानते हैं, उसे मानसिक विचारों को पढना या कुछ और कहते हैं। वह नहीं जानते कि इस विषय में क्या कहे।

88 तो, आप देखिए, जैसे वे ज्ञानवान पुरुष जब... याद रखे, जब यरूशलेम में घुसे, सितारा ओझल हो गया। और जब तक आप मतो और संप्रदायिक मनुष्य को देखते रहेंगे कि आपकी परमेश्वर की ओर अगुवाही करेगा, तो परमेश्वर की सहायता आपको छोड़ देगी। लेकिन जब वे बीमार होकर और इससे थक गये, और उन्हें छोड़ दिया, उनके मतो और संप्रदायो को जो उन यहूदियों के थे, और यरूशलेम से बाहर आये, तब उनको सितारा फिर से दिखाई देने लगा और वह बड़ी ख़ुशी के साथ आनंद से भर गए थे। उन्होंने मार्गदर्शक को फिर से देखा! ओह, उस ठंडे रिवाजो से भरे कलीसिया में जाने के बाद, फिर उस अच्छे ज्वलंत कलीसिया में आना कितना अच्छा है, देखिए मार्गदर्शक अगुवाही कर रहा है, कितनी भिन्नता है! जी हाँ, "हमने उसका सितारा पूर्व में देखा है और उसे दण्डवत करने आए हैं।"

89 यहोशू ने उनसे कहा, "अब तुम वाचा के सन्दूक के पीछे चलो, क्योंकि तुम पहले इस मार्ग से कभी नहीं निकले हो।" परमेश्वर उस वाचा के सन्दूक को कहीं और नहीं जाने देगा, परन्तु सीधा ले जाएगा। हर कोई उसके पीछे चला, और वह सीधा यरदन के पार गया।

90 ऐसे ही आज, पवित्र आत्मा के द्वारा है। जी हां, श्रीमान। यह पवित्र आत्मा है या नही, इस बात को हम जानते हैं, हम उसके प्रगटी–... प्रगटीकरण के द्वारा जान पाते हैं, परमेश्वर के वचन को जब प्रगट और प्रमाणित होते देखते हैं।

91 अभी, ज्यादा समय नहीं हुआ, कि कुछ भाई लोगो ने लहू और तेल लिया, और यदि वह इस प्रकार करना चाहते हैं तो ठीक है। मैं... यह बात

मुझ पर प्रमाणित नहीं हुई। ये वचनों के द्वारा प्रमाणित है, समझे, जब तक ये प्रमाणित हो रहा है जो परमेश्वर ने कहा, तब तक ठीक है। वे कहते है, "यही कारण है कि आप को पवित्र आत्मा मिला है, क्योंकि तेल आप के हाथ में है।" अब, मैं—मैं ऐसा नहीं कर सकता। समझे? नहीं, मैं विश्वास नहीं करता कि तेल का इससे कुछ लेना–देना है। और यदि वह लहू चंगा करता और उद्धार करता है, तो यीशु मसीह के उस लहू का क्या हुआ? यदि वह तेल चंगाई करता है, तो उसके कोड़े खाने का क्या हुआ? समझे? समझे?

92 मैं चाहता हूं कि मार्गदर्शक आये, जो आपको वचन की सच्चाई पर लाता है, तब आप जान जाते हैं कि आप शून्यता में हैं और आप उल्टी गिनती हेतु तैयार हैं। यह ठीक बात है, आप उड़ जाने के लिए तैयार हो रहे है। जी हां, श्रीमान। हाँ, क्योंकि क्यों? मार्गदर्शक वह है जो इसको यथार्थ में बदल सकता है।

93 मेरे पास पवित्रशास्त्र के हवाले है, मैंने यह हवाले दिए है, परन्तु मैं यह वाला पढ़ना चाहता हूं। यह दूसरा पतरस है, 1ला अध्याय, 21वा पद।

> *क्योंकि... कोई भी भविष्यवाणी पुराने* समय *में मनुष्य की इच्छा से कभी नहीं हुई: पर भक्त जन पवित्र आत्मा के* द्वारा *उभारे जाकर परमेश्वर की ओर से बोलते थे।*

94 भविष्यवाणी कैसे आई? मनुष्य की इच्छा से नहीं, ना ही नामधारी मतो के द्वारा; परन्तु जब पवित्र जन परमेश्वर की इच्छा से, पवित्र आत्मा के द्वारा उभारा जाता था। वह हमेशा परमेश्वर की ओर से पथ प्रदर्शक होता है। वह पवित्र आत्मा आग के स्तंभ में था, वह पवित्र आत्मा था, कोई भी मनुष्य जानता है कि वह मसीह था। मूसा ने मिस्र छोड़ा, उसने मसीह के कारण निन्दित होने को मिस्र के धन से अधिक बड़ा धन समझा। मसीह वो एक ही था। ठीक है, जब वे वहां खड़े होकर कहते हैं और तू कहता हैं, "तो ठीक है, तू कहता तू... क्यों, तूने अब्राहम को देखा, और तू पचास वर्ष से ऊपर का नहीं? "

95 उसने कहा, "इससे पहले कि अब्राहम था, **मैं हूं**।" **मैं ही हूं** जो मूसा को आग के खम्बे में जलती हुई झाड़ी में मिला। जी हां, श्रीमान। वह परमेश्वर था जो शरीर में प्रगट हुआ। कोई तीसरा व्यक्ति नहीं; वही एक व्यक्ति जो भिन्न कार्यस्थान में है। स्पष्ट रूप से तीन ईश्वर नहीं; वरन एक ही परमेश्वर

की तीन कार्य स्थितियां है। सही है।

96 तो ठीक है, अब, वचन। हमेशा ही, परमेश्वर जब प्रबन्ध करता है, तो बहुत अच्छा प्रबन्ध करता है। जब परमेश्वर ने अपनी कलीसिया कि किलेबन्दी का प्रबन्ध किया, तो उसने बहुत अच्छा प्रबन्ध किया। जब उसने अदन वटिका में आदम और हवा को दिया, तो उसने उन्हें अपना वचन दिया था। "तुम इस वचन के पीछे बने रहो, और तुम सुरक्षित हो। परन्तु जब तुम उससे हट जाओगे, याने जिस दिन तुम उसको खाओगे उसी दिन तुम मर जाओगे।" परमेश्वर ने कभी अपनी रणनीति नहीं बदली। और शैतान भी कभी नहीं बदला; कैसे वह आदम और हवा के अंदर प्रवेश कर गया, आज भी वह वैसे ही कर रहा है। क्यों? उनकी तर्क–वितर्क की कोशिशो के द्वारा। "अब, यह तर्कपूर्ण है कि परमेश्वर ऐसा नहीं करेगा। ओह, परमेश्वर ने ऐसा कहा है," शैतान ने कहा, "परन्तु निश्चय ही एक पवित्र परमेश्वर यह नहीं करेगा।" बिल्कुल वह नहीं करेगा, क्योंकि उसने कहा वह वही करेगा!

97 और आज भी लोग यही कहते हैं, "ओह, अब थोड़ा रुकिए! आप अब भी विश्वास नहीं करते है, यदि कहे कि मैं कलीसिया जाता हूं और मैं अपना दशमांश देता हूं, और मैं *ऐसा* करता हूं, *वो* करता हूं, परमेश्वर मुझे वहां नीचे गिरायेगा?" जब तक मनुष्य फिर से जन्म ना ले, वह परमेश्वर के राज्य को समझ नहीं सकता! देखा? कोई बहाना नहीं चलेगा! "तो ठीक है, एक निर्धन बूढ़ा व्यक्ति, एक निर्धन बूढ़ी स्त्री, वे अच्छे प्राण है।" केवल एक ही विधी है कि वे कभी परमेश्वर को देख सकते है, वो है कि नये सिरे से जन्म ले। बस इतना ही। मैं इसकी चिन्ता नहीं करता कि वह कितने छोटे, कितने बूढ़े, कितने जवान है, उन्होंने क्या किया है, और कितना वे कलीसिया जाते है, वे कितने संप्रदायों को जानते हैं, और वे कितने मत–सिद्धांत का वर्णन करते है। आपको नए सिरे से जन्म लेना ही होगा या आप आरंभ से ही बुनियाद पर भी नहीं है। यह बिल्कुल ठीक है।

98 तो, आप देखिए कि आपको मार्गदर्शक की आवश्यकता है। वह आपको सत्य की ओर मार्गदर्शक करेगा, और सत्य वो वचन है। वह आपका मार्गदर्शन करेगा। और वह सदैव यही करता रहा है। परमेश्वर कभी भी कुछ नहीं बदलता है, क्योंकि वह अनंत है और वह जानता है कि सबसे अच्छा क्या है। वह सर्वव्यापी है, वह सर्वज्ञानी है, वह—वह सब कुछ है।

यह ठीक है, परमेश्वर ऐसा ही है, उसे बदलने की आवश्यकता नहीं है। यह ठीक है।

99 वह आपको जिस मार्ग पर ले जा रहा है, उसका वह तय करने वाला है। पवित्र आत्मा, जोकि मार्गदर्शक है, वही उस वचन को सिद्ध करता है जिसे वो सिखाता है। अब, लूका मार्गदर्शक की अगुवाई में, यह कहता है, "जाओ सारे संसार में जाकर, हर एक प्राणी को सुसमाचार प्रचार करो। वह जो विश्वास करेगा और बपतिस्मा लेगा उसी का उद्धार होगा, वह जो विश्वास नहीं करेगा वह नाश किया जाएगा। और विश्वास करने वालों के यह चिन्ह होंगे; वह मेरे नाम से उन प्रेतआत्माओ को निकालेंगे, नई–नई भाषाएं बोलेंगे, सापों को उठा लेंगे, नाशक वस्तू भी पी जायेंगे, अपने हाथ बीमारों पर रखेंगे और वे चंगे हो जाएंगे।" और बाईबल कहती है कि, "वे सब स्थानो में गये," मार्गदर्शक की अगुवाही के द्वारा, आप जानते हैं, "वचन प्रचार किया गया, चिन्ह प्रगट हुए।" यह क्या था? मार्गदर्शक प्रमाणित कर रहा था कि यह सत्य था!

100 यह परमेश्वर की नीति थी। इसे इसी तरह निर्धारित किया गया था। यही उसकी योजना है; वह इससे बदल नहीं सकता, क्योंकि वह अनंत है। आमीन। वह इससे बदल नहीं सकता है; वह परमेश्वर है। मैं बदल सकता हूं; मैं एक मनुष्य हूं। आप बदल सकते हैं; आप एक पुरुष या स्त्री हैं। लेकिन परमेश्वर नहीं बदल सकता। मैं सिमित हूं; मैं गलतियां कर सकता हूं और गलत बात कह सकता हूं, हम सब गलती कर सकते हैं। लेकिन परमेश्वर होने के नाते, वह नहीं कर सकता। उसका पहला विचार ही सिद्ध होता है। जिस तरीके से परमेश्वर पहली बार करता है, उसी तरीके से वह हर समय करेगा। यदि किसी पापी को बचाने के लिए उसे पुकारा जाये, तो वह उसे एक ही आधार पर बचा सकता है। जब फिर कोई पापी आता है, तो उसे फिर से वैसे ही करना होता है, नहीं तो जो उसने पहली बार किया था वह गलत था। आमीन। मैं उससे प्रेम करता हूं। मैं जानता हूं कि यह सत्य है।

101 मैं तैंतीस वर्ष का हूं, यहां साढे तैंतीस वर्षो से सुसमाचार प्रचार कर रहा हूं, मैंने कभी नहीं देखा कि वह असफल रहा हो। मैंने संसार के सातो चक्कर लगाने के दौरान इसे परखा है, हर तरह के धर्मों और हर प्रकार के लोगों में, एक समय में लगभग पांच लाख लोगों के सामने, और यह कभी भी विफल नहीं हुआ। मैं किसी पुस्तक से नहीं बोलता हूं, मैं व्यक्तिगत

अनुभवो के आधार पर बोलता रहा हूं, कि मैं जानता हूं कि परमेश्वर अपने वचनो के पीछे होता है और इसका सम्मान करता है। अब, आपके पास यदि किसी प्रकार का मत हो, तो अच्छा होगा कि उस पर आप ध्यान रखे। लेकिन पवित्र आत्मा परमेश्वर के वचन का पक्ष लेता है।

102 संत यूहन्ना के 1ले अध्याय के और 1ले पद में, वह कहता है कि वह वचन है, वह मार्गदर्शक है: "आदि में वचन था, वचन परमेश्वर के साथ था, और वचन परमेश्वर था। और वचन देहधारी हुआ और हमारे बीच में डेरा किया।" ओह!

103 पतरस का उसने मार्गदर्शन किया कि उसने प्रेरितों के काम 2:38 में कहा, कि पवित्र आत्मा कैसे पाया जाए, उसने कहा, "तुम में से हर एक पश्चाताप करो, और अपने पापों की क्षमा के लिए प्रभु यीशु मसीह के नाम में बपतिस्मा ले, और तब मार्गदर्शक आपको वहां से आगे ले जायेगा।" जी हां, यही वो चीज है जो करना है। पहले, आपके अपने अविश्वास, अपने पापो के लिए प्राश्चित करना है, कि आपने इन चीजों का अविश्वास किया है। पश्चाताप करे, और फिर बपतिस्मा ले, और तब मार्गदर्शक वहां से आपको आगे ले जायेगा। देखिए, यह आपका कर्तव्य है। पश्चाताप करना आपका कर्तव्य है। बपतिस्मा लेना आपका कर्तव्य है। तब यह मार्गदर्शक का कर्तव्य है कि आपको वहां से आगे ले जाए, आपका मार्गदर्शक सद्गुण से ज्ञान, फिर संयम, फिर धीरज, फिर भक्ति, और फिर भाईचारे की प्रीति, और इसके बाद पवित्र आत्मा आप पर मोहर करता है। देखा? तब आप परमेश्वर के पूरे डील–डौल में होते है, परमेश्वर का एक सच्चा पुरुष, परमेश्वर की एक सच्ची स्त्री होते है, जिनका लंगर मसीह में डाले हुए हैं। मुझे यह बहुत अच्छा लगता है, कि लंगर मसीह में डाले हुए है।

104 जी हाँ, मरकुस का मार्गदर्शन पवित्र आत्मा के द्वारा हुआ कि वह मरकुस 16 को लिखे, निश्चय ही।

105 यूहन्ना का भी मार्गदर्शन हुआ जब उसने प्रकाशितवाक्य लिखा। उसका मार्गदर्शन मार्गदर्शक के द्वारा हुआ। उसकी अगुवाई मार्गदर्शक के द्वारा हुई और उसने कहा, "जो कोई भी एक शब्द इसमें से निकालेगा, या उसमें मिलायेगा, उसका वही भाग, जीवन की पुस्तक में से निकाल दिया जायेगा।"

106 अब, आप परमेश्वर के वचन के स्थान पर कोई और विकल्प कैसे ले

सकते हैं, और फिर भी आप कहते है कि पवित्र आत्मा हमारा मार्गदर्शन कर रहा हैं? क्या इसका कोई अर्थ नहीं निकलता, क्या निकलता है? नहीं, श्रीमान। इसका कोई अर्थ नहीं निकलता।

107 वो सारे जीवन भर मेरा मार्गदर्शक रहा है। उसने मेरा मार्गदर्शन जीवन की ओर किया। इसी ने मेरा मार्गदर्शन जीवन की ओर किया, और वही मेरा जीवन है। उसके बिना मेरे पास कोई जीवन नहीं है। उसको छोड़ मुझे और कुछ नहीं चाहिए। वह मेरे लिए सब कुछ है। मेरी मुसीबतों की घडी में, वह मेरे साथ खड़ा रहता है। बीते कल में उसने मुझे आशीषित किया, आज उन्होंने वैसे ही किया। मैं उससे और क्या आशा करूं? वह सदा तक एक सा है, उसके नाम को स्तुति मिले! आमीन। जी हां, श्रीमान। उसने इसकी प्रतिज्ञा की। वह इसे करेगा। वह मेरा जीवन है, वह मेरा मार्गदर्शक है, वह मेरा सब कुछ है। मैंने उसका विश्वास किया है। मेरे ऊपर कुछ कठिन परीक्षाये आयी। मैं जहां कही जाता हूं, मैं उस पर भरोसा करता हूं। मैं आप से चाहता हूं कि आप भी करें। जब आप कपड़े धोने जाये, तो आप महिलाये, उस पर भरोसा करें। यदि आप शहर में जाये, तो उस पर भरोसा करे।

108 एक बार मैं जंगल में वही गया जहां के लिए मैं सोचता था कि मैं एक प्रकार से अच्छी जंगल की जानकारी रखता हूं, आप जानते हैं, मैंने बहुत अधिक शिकार खेला है। मैंने सोचा, "मुझे मूर्ख नहीं बना सकता है, कोई भी इस... मैं यहां नहीं खो सकता। ओह, प्रभु! मुझे यह बात अच्छी लगती थी कि मेरी माँ आधी भारतीय थी। आप मुझे जंगल में भटका नहीं सकते, मैं जानता हूं कि मैं कहां पर हूं।"

109 और मेरे हनीमून के विषय में, मैंने अपनी पत्नी से थोड़ी चालाकी जैसी करी, मैंने उससे कहा कि, "तुम जानती हो, प्रिय, यदि हम अक्टूबर की तेईस तारीख को विवाह करे तो अच्छा रहेगा।" यदपि, यही है जब प्रभु ने ही ऐसा करने के लिए कहा था।

110 और मैंने सोचा, "अब, इस छोटे से हनीमून के लिए, मैंने अपने पैसे बचाए हैं, और मैं उसको नियाग्रा झरने पर ले जाऊंगा, और वही से एडिरोंडैक पर जाकर और थोड़ा शिकार करूंगा।" देखा? इसलिए मैंने उसे और बिली को लिया, वह बस एक छोटी सी चीज थी। और इस प्रकार से मैं उसे हनीमून के लिए ले गया, और यह मेरा शिकार का दौर भी था,

आप जानते हैं। इसलिए—इसलिए मैंने सोचा कि यही करना ठीक रहेगा। और इसलिए मैं उसे वहां ऊपर लेकर गया, और वो...

111 मैंने श्रीमान डेंटन को जो कि वहां के जंगल अफसर थे। और लिख दिया कि हम आ रहे है और ऊपर हुरीकेन पहाड़ पर जायेंगे। और मैंने कहा, "श्रीमान। डेंटन, मैं ऊपर आ रहा हूं, इस पतझड़ में मैं आपके साथ किसी भालू का शिकार करूंगा।"

112 और उन्होंने कहा, "ठीक है, बिली, तुम आ जाओ।" इसलिए उसने कहा, "मैं *फंला–फंला* तारीख में तुम्हें वहीं मिलुंगा।" तो, मैं, मेरी पत्नी और बिली वहां एक दिन पहले पहुंच गए, और वहां उस छोटे से घर में ताला लगा था। वहां जंगल के पास एक छोटी–सी झोपड़ी थी।

113 जहां, कि भाई फ्रेड सोथमन और मैं कुछ समय पहले गए थे और वही खड़े हुए थे। पवित्र आत्मा को, मैंने वहां पीली रोशनी में उस झाड़ी के पास देखा था, और भाई फ्रेड ठीक वही खड़े हुए थे। उसने कहा, "तुम अलग हो जाओ, मैं कल तुमसे बात करना चाहता हूं। कल," और कहा कि, "सावधान रहो, उन्होंने तुम्हारे लिए फन्दा तैयार कर रखा हैं।" कहा कि, "चौक्कने रहो!" भाई फ्रेड, क्या यह ठीक बात है? और मैंने जाकर और उस रात हजारो लोगों को यह बात वेरमाऊट में बताई, मैंने कहा कि, "मेरे लिए एक फन्दा तैयार रखा है; और मैं उसे देखने जा रहा हूं। वह कहाँ है यह मुझे नहीं मालूम।" और अगली ही रात्री में, वह वहीं आया जहां वह था। कहा कि, "यह तुम्हारे लिए वह फन्दा है जो तैयार रखा है।" जी हां, श्रीमान। परन्तु पवित्र आत्मा ने मेरा मार्गदर्शन किया कि क्या करना है। और, ओह, प्रभु, सच में यह बिल्कुल सही था! ओह, आप में से बहुत से जानते हैं कि वह क्या था। उसे बताने के लिए अभी समय नहीं है।

114 परन्तु वहां उस स्थान पर खड़े हुए, उस समय मौसम एकदम ठंडा होने लगा। दूसरे दिन श्रीमान डेंटन आ रहे थे, मैंने कहा, "तुम जानती हो, प्रिय, यह अच्छा होगा यदि मुझे घर ले जाने के लिए एक—एक बड़ा सा हिरन मिल जाए।" मैंने कहा, "हमने किया... मुझे इन पैसे को बचाना था, और हमारा अभी–अभी विवाह हुआ था।" और मैंने कहा, "यदि आज मुझे एक छोटा सा भी शिकार मिल जाता है, तो हमारे जाड़े भर का भोजन हो जायेगा।"

115 और उसने कहा, "ठीक है, बिली, कर लो।" उसने कहा, "अब, ध्यान

रखना, मैं ऐसे जंगलो में पहले कभी नहीं रही हूं," उसने कहा। वह जंगलो में पहाड़ो के लगभग पच्चीस मील अन्दर थी, आप जानते हैं, और उसने कहा, "मुझे यहां के बारे में कोई ज्ञान नहीं हैं।" और उसने कहा, "तो मैं... "

116 मैंने कहा, "ठीक है, अब, तुम्हे याद होगा, ये दो वर्ष पहले की बात है मैंने उन तीन भालू को मारा था। वे वहां ऊपर बिल्कुल ठीक वहां पहाड़ की चोटी पर थे।" और मैंने कहा, "अब, बड़ा सा हिरन और कुछ भालू मिलेगे," और मैंने कहा, "तो इस शरद ऋतु के लिए हमारे पास हमारा भोजन रहेगा।" तो, देखिए यह सुनने में काफी अच्छा लगता है, आप जानते हैं। (और हमने वह काली रसभरी तोड़ी, और तब हमने अपनी शरद ऋतु के लिए—के लिए कोयला लिया; और तो बिली ने उन्हें बेचा, और मेडा और मैं, जब शाम को काम पर से वापस आता तो मिलकर तोड़ते थे, जब मैं अपने गश्ती दल से निकल गया था।) अत: तब मैंने—मैंने कहा, "ठीक है, मैं अपनी बंदूक उठाकर मैं वहां पर जाता हूं।" मैंने कहा, "वहां बहुत सारे हिरन है, मैं एक को लेकर आऊंगा।" और मैंने कहा, "आप जानते हैं," मैंने कहा, "तब मैं उसे लेकर आता हूं।" और मैंने कहा, "हम... मैं थोड़ी देर में वापस आ जाऊंगा।"

उसने कहा, "ठीक है।"

117 इसलिए, जब मैं निकला, तो करीब–करीब कुछ ठीक ही था। और आप में से कोई भी न्यू हैम्पशायर के लोग होंगे, और जो न्यू इंग्लैंड में है, यह जानते हैं कि इसका क्या मतलब होता है जब वह कोहरा नीचे आता है, या पहाड़ों में कहीं भी, आप नहीं जान पाते कि आप कहां पर हैं। बस इतना ही है। आप अपने आगे अपने हाथ तक को नहीं देख सकते है। तो फिर मैं उस एक—एक छोटे से काटने वाली सी ठंडे में से होकर निकलने लगा, और ऊपर चोटी की कतार पर पहुंच गया। और वहां मैंने एक चीते को देखा, जिसको कि इस देश के इलाके में चीता कहते है। लेकिन पश्चिम में हम उसे तेंदुआ कहते हैं। वह ऊंचे पहाड़ो पर लोग उसे पहाड़ी शेर कहते हैं। लेकिन है यह एक ही जानवर। सही में यह एक तेंदुआ ही है। यह बड़ी बिल्ली, लगभग नौ फुट लम्बा, और एक सौ पचास, से दो सौ पाउंड तक होता है। उसने जैसे सड़क पार करी, और तो मैंने तुरंत अपनी बंदूक खींची लेकिन, इतनी तेजी से नहीं कि मैं उस पर गोली दागता।

118 और आप समझते है, मैं इस तेंदुये का पीछा उन पत्तियों को देख कर करता रहा जहाँ से वह निकला था, आप जानते है। मैं उसे सुन सकता था। वह चारो पैरो पर चलने वाला था। दो पैरों पर नहीं, उसके चार पैर थे। और मैं जानता था कि वह हिरन नहीं है, क्योंकि हिरन दो पैरो पर छलांग मारता है। और आप जानते हैं, बिल्ली जाति के जानवर एकदम लापता हो जाते है। और भालू जब चलता है तो घुमावदार कदम मारता है। और इसलिए मैं समझ गया कि यह एक तेंदुआ ही है। और वह एक लट्ठे के पीछे छिपा था और मैं उसे नहीं देख सका, और जैसे ही उसकी एक झलक दिखी वह फिर गायब हो गया।

119 और मैंने देखा कि उसने पत्तियों को कहाँ पर हिलाया, आप जानते हैं, वहां ऊपर पहाड़ की चोटी पर, और इस तरह से नीचे, और मैंने ध्यान ही नहीं दिया था कि बादल हर समय आ रहे थे, आप जानते है, और कोहरा बराबर बढ़ता जा रहा है। और मैं इस तेंदुये का पीछा करते–करते एक बड़ी घाटी को पार कर दूसरी बड़ी घाटी में पहुंच गया। मैंने सोचा, "थोड़ी देर बाद ही मैं उसे ढूंढ लूंगा।" और मैं एक स्थान को देखकर, और मैं एक ऊंचे स्थान पर चढ़कर, और इस तरह उसे चारों ओर देखकर, और इधर–उधर झाँका, देखा कि क्या मैं देख सकता हूं; बहुत ही ध्यान से सुन रहा था, और नीचे उतरा, फिर से खिसक गया। और वह पत्तो के घर्षण की आवाज करता, मुझ से आगे, जैसे कि बाहर जा रहा था। क्योंकि वह पेड़ों पर चिपक–चिपक कर जा रहा था, जिससे कि मैं उसका पीछा ना कर सकूं। देखो, वह चालक हो गया था, वह पेड़ पर चढ़कर एक पेड़ से दुसरे पेड़ पर कूद कर जा रहा था। क्योंकी वह जानता था कि अब मैं उसका पीछा ना कर सकूंगा। ओह, मैंने सोचा, "ओह, जो भी हो!"

120 और मैं घाटी की ओर वापस जाने लगा, और मुझे एक भालू की गंध आई, एक बूढ़ा नर भालू। मैंने सोचा कि, "अबकी बार मैं इसे मार लूंगा, यह ठीक है!" मैंने फिर गन्ध ली, और कुछ आगे बढ़ा, और मैंने सब प्रकार के चिन्ह और हर एक चीज को देखने का प्रयत्न किया। और मुझे कुछ भी नहीं दिखाई दे सका; मैं फिर वापस मुड़ा, और मुड़कर पहाड़ के दूसरी ओर चला दिया। और फिर मैंने ध्यान देना शुरू किया, कि कुछ धुन्ध सी होती जा रही है। और मैंने फिर गन्ध महसूस करी, जो कहीं हवा से आ रही थी। और मैंने कहा, "नहीं। अब, क्या हुआ, क्योंकि हवा तो *दूसरी* ओर से आ रही थी, और मैंने आकर... मैंने तो उसको वहां नीचे की ओर

महसूस किया था तो यह गंध *कही* ओर से आ रही है, और अब मैं वहां से पार हो गया हूं और हवा इस दूसरी दिशा से आ रही है। और मैं फिर वापस वहीं गया, जहां मैंने पहली बार उसकी गन्ध ली थी, और गन्ध फिर वही मिली।"

121 और जब मैं वापस आ रहा था, तब उन दरारों को पार करते हुए, मैंने झाड़ी हिलती हुई देखी। और जब मैंने देखा, तो कुछ काला–काला हिला। मैंने सोचा, "यह रहा वह।" मैंने जल्दी से गोली बंदूक में डाली, और एकदम शांत खड़ा हो गया। और, जब वह आया, तो वह तो एक बहुत बड़ा नर हिरन था। मैंने सोचा, "जो कुछ भी हो, मैं यही तो चाह रहा था।" हिरण मार गिराया।

122 मैंने सोचा, "अच्छा!" मैंने कभी ध्यान ही नहीं दिया कि यह एक प्रकार से... उस समय मैंने उसे ठीक किया, देखा... मैंने अपने हाथों को साफ किया और अपने चाकू को तैयार किया, इसे वापस पीछे की ओर लगा लिया। और मैंने सोचा, "परमेश्वर की महिमा हो! प्रभु यीशु मसीह, आपका धन्यवाद कि आपने मुझे शरद ऋतु का भोजन दे दिया है। परमेश्वर की स्तुति हो!" और अपनी बंदूक को उठाया। मैंने सोचा, "मैं अब ठीक घाटी में से होकर वापस जाऊंगा।" मैंने कहा, "देख, भाई, तूफान आ रहा है। अच्छा होगा मैं यहां से वापस निकलूं और जल्द मेड़ा और उनके पास पहुंच जाऊं।" मैंने कहा, "मुझे जल्दी करना होगा।"

123 वहां ऊंची घाटी पर, मैं अपने बड़े लाल कोट का बटन खोले ही पहुंच गया और मैं *वहां* ऊपर घाटी पर गोल–गोल, दौड़ रहा था। आप जानते है पहली चीज जो मैंने सोची कि, "ओह, मैं उस मोड़ को कहां छोड़ आया? " हवा तो नीचे तेज थी, कि पेड़ आपस में मिल रहे थे। मैंने सोचा, "मैं मोड़ कहां छोड़ आया? " मैं चलता रहा। मुझे—मुझे मालूम था कि मैं सीधा हूरिकेन पहाड़ की ओर जा रहा हूं। लेकिन जब मैं रुका, तो पसीने में तर रहा था, मैंने सोचा कि, "क्या बात है? मैं लगभग आधे घंटे से, या पौन घंटे से चल रहा हूं, लेकिन मैं उस स्थान को नहीं पा सका जहां से मोड़ छोड़ा था।" मैंने ऊपर देखा तो सामने हिरण टंगा था। मैं तो फिर उसी स्थान पर आ गया। मैंने सोचा कि, "अच्छा, मैंने क्या किया? "

124 और मैं फिर से चला। मैंने सोचा कि, "मैं इस बार निकल जाऊंगा, मैंने बस ध्यान नहीं दिया था।" मैंने हर हर एक हरकत को हर कहीं ध्यान

दे रहा था। और मैं ढूंढता रहा, ढूंढता रहा, ढूंढता रहा। बादल घिरते जा रहे थे, मुझे मालूम था कि तूफान आ रहा है, और धुन्ध बहुत नीचे थी, और तब मैंने ध्यान देना शुरू किया। मैंने सोचा कि, "मैं थोड़ा और आगे बढ़ूंगा," और मैं आगे, आगे, आगे, आगे, आगे, आगे, आगे चलता रहा। और मैंने सोचा, "भाई, अजीब बात है, यह स्थान लगता है कि मैंने पहले भी देखा है।" और मैंने देखा, और वहां सामने मेरा हिरण टंगा है। समझे?

125 आप समझे मैं किस राह पर था? भारतीय इसे "मृत्यु यात्रा" कहते हैं। देखिए, आप एक ही स्थान पर चक्कर लगा रहे हैं, गोल–गोल और गोल–गोल। तो ठीक है, मैंने सोचा कि मैं तो एक अच्छा मार्गदर्शक भी हूं जो कभी खोया ही नहीं। देखिए, मुझे जंगल में कुछ भी बताने की आवश्यकता नहीं थी, मैं अपने सारे मार्ग जानता हूं। समझे?

126 और मैंने फिर से चलना शुरू किया। मैंने कहा, "मैं यह गलती नहीं कर सकता।" और मैं फिर से वापस आ गया।

127 और मैं ऊपर उस घाटी में थोड़ा ही चला होऊंगा, और तभी बर्फ गिरनी शुरू हो गयी। ओह, प्रभु, सभी जगह बर्फ पड़ रही थी! और अंधकार होता जा रहा था। और मुझे मालूम था कि आज रात मेड़ा जंगल में मर जाएगी, वह नहीं जानती थी कि जंगल में कैसे बचा जाता है। और बिली तो बस लगभग तीन, चार साल का ही था, बस वो एक छोटा सा बच्चा ही था। और मैंने सोचा कि, "वे क्या करेंगे? " और मैं तो इतना चलने के बाद और मैं काई के फर्श पर पहुंचा, मैंने सोचा कि, "मैं कहीं तो एक समतल पर चल रहा हूं, और मैं यहां कुछ भी नहीं देख सक रहा हूं, यह सब कोहरा है।" मैं अब इधर–उधर जा रहा था।

128 सामान्य तौर पर, मैंने कोई जगह ढूंढ़ ली होती और वहीं रुक जाता, यदि मेरे साथ कोई होता। नहीं तो मैं कही पर एक दो दिन तक रुक जाता, जब तक तूफान ना थमता और फिर बाहर आता। और मेरे हिरन के टुकड़े करके... अपनी पीठ पर लाद कर जाता, और उसे ही खाता, और इसके बारे में भूल जाता। लेकिन जब आपकी पत्नी और बच्चा जंगल में मरने पर हो, तो फिर आप ऐसा नहीं कर सकते। समझे?

129 इसलिए मैंने सोचना आरंभ किया कि, "मैं क्या कर सकता हूं? " इसलिए मैं फिर थोड़ा आगे बढ़ा। और मैंने सोचा कि, "थोड़ा रुकता हूं। जब मैंने पहली घाटी पार कर ली, और हवा सीधी मेरे मुंह पर लग रही

थी, मुझे तो इसी रास्ते से ही आना था। मुझे इस रास्ते से ही आना चाहिए था।" और मुझे यह आश्चर्य था कि इतना चलने के बाद भी, लेकिन मैं यह नहीं जान पाया कि मैं कहां था। मैंने कहा, "ओह!" मैं तो परेशान होने लगा हूं। और मैंने सोचा, "एक मिनट रुको, बिल, तुम खोये नहीं हो," मैं यह कह कर अपने को धोखा देने का प्रयत्न कर रहा था। आप अपने को धोखा नहीं दे सकते। नहीं, नहीं। आपका भीतरी विवेक आपको बता देगा कि आप गलती पर हैं।

130 ओह, आप—आप कहने की कोशिश करते हैं, "ओह, मैं उद्धार पा चुका हूं, मैं कलीसिया जाता हूं।" आप परवाह नहीं करते है, आप प्रतीक्षा करे जब तक मृत्यु के बिस्तर पर नहीं पहुंच जाते, और तब आपको भिन्नता का आभास होता है। आपका विवेक आपको बताता है। आपके अंदर कुछ होता है जो आपको बताता है कि आप गलत हैं। देखा? आप जानते हैं यदि आप मर गए तो आपकी भेट पवित्र परमेश्वर से नहीं हो सकती। जैसा कि हमने उसे पिछली रात्री में देखा, यहाँ तक कि पवित्र दूतों को भी अपने मुख छिपाने पड़ते है कि उसके सामने खड़े हो सके। आप यीशु मसीह के लहू के परदे के बाहर होकर उसके सामने कैसे खड़े होंगे?

131 मैंने सोचा, "ओह, मैं इसे कर लूंगा।" और फिर चल पड़ा। और मुझे लगा कि मुझे कुछ सुनाई पड़ रहा है। तो मैं फिर परेशान हो गया। और मैंने सोचा कि, "अब, यदि मैं ऐसे ही करूंगा, तो मैं छिन्न–भिन्न हो जाऊंगा।" और जब कोई व्यक्ति जंगल में खो जाता है, तो वह ऐसे ही अक्सर अपनी सुध–बुध खो बैठता है। तब वह अपनी बंदूक से अपने आप को ही मार लेता है; या किसी एक गड्ढे में गिरकर अपनी टांग तोड़ लेता है, और जब तक मर ना जाए, वो वहीं पड़ा रहता है। तो मैंने सोचा कि, "मैं क्या करने जा रहा हूं? " इसलिए मैंने चलना शुरू कर दिया।

132 और मुझे सुनाई पड़ रहा था कि कोई मेरे कान में कह रहा था कि, "मैं संकट में अति सहज से मिलने वाला सहायक हूं।" और मैं बस चलता ही जा रहा था।

133 मैंने सोचा कि, "अब, मैं थोड़ा ठीक हो गया हूं मैं सुन सकता हूं, कि वह आवाज मुझ से बात करती है।" मैं आगे चलता रहा। मैं आगे चला "*व्यूह, व्यूह, व्यूह,*" की सीटी सी आवाज, आप जानते हैं। मैंने सोचा कि, "अब, मैं खोया हुआ नहीं हूं। तुम जानते हो कि तुम कहां हो, लड़के!

तुम्हारे साथ क्या मामला है? तुम नहीं खो सकते। तुम—तुम तो एक अच्छे शिकारी भी हो, तुम नहीं खो सकते।" आप जानते हैं, कि अपने आप को कुछ समझना, उसके द्वारा अपने को धोखा देना है।

134 आप इसे धोखा नहीं दे सकते। *यहाँ* अन्दर कहीं एक छोटा सा पहिया घूम रहा है, कहते हुए, "लड़के, तुम जानते हो और तुम खो गए हो। समझे, तुम खो गए हो।"

135 मैं चलता रहा। "ओह, मैं खोया नहीं हूं! मैं सही हो जाऊंगा। मैं अपना मार्ग ढूंढ लूंगा।" हवाए बंद हो गयी, और चीजें अजीब सी दिखने लगी। बर्फ गिरना आरम्भ हो गयी, छोटी–छोटी बर्फ की फुहारें, जिसे हम "बर्फ की छींटें पड़ना" कहते हैं।"। और मुझे, "अपनी पत्नी और बच्चे का विचार आया! मैं नहीं... " मैंने सोचा, "ओह, प्रभु!"

136 और मैंने फिर से यह आवाज साफ–साफ सुनी कि, "मैं संकट में अति सहज से मिलने वाला सहायक हूं।" और मैं उन दिनों मैं सुसमाचार का सेवक था, और ठीक यहीं आराधनालय में प्रचार करता था।

137 तो मैंने सोचा कि, "अच्छा, मैं क्या कर सकता हूं? " और मैंने रुककर चारो ओर देखा, और अब कोहरा ही कोहरा छाया हुआ था। मैं... ऐसा ही था। कि तब कुछ भी नहीं किया जा सकता था। मैंने सोचा, "ओह, मैं क्या कर सकता हूं? " मैंने सोचा, "श्रीमान, मैं जीने के योग्य नहीं हूं, मुझ में कुछ ज्यादा ही आत्म–विश्वास था। मैं सोचता था कि मैं एक शिकारी हूं, लेकिन मैं हूं नहीं।"

138 और, भाई, मैंने सदा उस पर भरोसा किया है। निशानेबाजी में, मेरा वहां कीर्तिमान है। और मछली पकड़ने में, मैं ख़राब हूं, परन्तु मेरा हमेशा ही उस पर भरोसा रहा। निशाने में भी, मैं ख़राब हूं, लेकिन उसने ही मुझे संसार में कीर्तिमान बनाया। समझे आप? मैंने हिरण को सात, आठ सौ गज की दूरी से गिराया है। एक बंदूक वहां मेरे पास थी, जिससे मैंने पैंतीस शिकार एक भी निशाना चूके बिना गिराये है। बस कहीं भी जाकर मालूम कर लीजिए, अगर कर सकते हैं। समझे? ना ही मैं, ये वो था। मैंने उस पर भरोसा किया है।

और जब मैं वहां था, तो मैंने सोचा, "मैं क्या कर सकता हूं? मैं क्या कर सकता हूं? "

139 और तब... वह आवाज मेरे और पास, और पास आने लगी कि, "मैं संकट में अति सहज से मिलने वाला सहायक हूं, एक अति सहज से मिलने वाला सहायक।"

140 मैंने सोचा कि, "क्या परमेश्वर मुझसे बात कर रहा है?" और मैंने अपनी टोपी उतार ली। मेरे पास गश्त लगाने की टोपी थी, जिसके चारों ओर लाल रुमाल बंधा हुआ था। वह उतार कर मैंने नीचे रख दी। और अपना कोट जो कि नम हो गया था, उतार दिया। और मैंने अपना कोट नीचे बिछाकर, अपनी बंदूक पेड़ से लगाकर खड़ी कर दी। मैंने कहा, "स्वर्गीय पिता, मैं अब अपने आपे में नहीं हूं, मैं उस आवाज को सुन रहा हूं जो मुझसे बोल रही है। क्या यह आप है?" मैंने कहा, "प्रभु, मैं आपसे स्वीकार करता हूं कि मैं शिकारी नहीं हूं। मैं नहीं हूं, मैं—मैं अपना रास्ता भी नहीं ढूंढ सकता। आपको मेरी सहायता करनी है। मैं जीने के योग्य नहीं हूं, और चीजों को कर रहा हूं को मैंने किया है, यहाँ पर आकर और सोच रहा हूं कि मैं इसके विषय बहुत कुछ जानता हूं और मैं कभी खो नहीं सकता। प्रभु, मुझे आपकी आवश्यकता है। मेरी पत्नी एक अच्छी स्त्री है। मेरा बच्चा, मेरे छोटे लड़का, उसकी मां चली गई है, और वह इसकी देखभाल के लिए यत्न कर रही है, और मैंने उससे अभी विवाह किया है। और यहाँ वह छोटा बच्चा वहां है, आज रात वे दोनों वही जंगल में मर जायेंगे। उस बर्फीली हवा से तापमान शून्य से दस अंश नीचे चला जाएगा, और वे नहीं जान पाएंगे कि कैसे जीना है। और वे आज रात मर जाएंगे। परमेश्वर, उन्हें मरने ना दीजिए। मुझे उनके पास वहां ले चलिए, जिससे मैं उन्हें मिल सकूं ताकि वह ना मरे। मैं खो गया हूँ! मैं खो गया हूं, परमेश्वर! मैं—मैं अपना रास्ता नहीं ढूंढ सकता। क्या आप कृपया मेरी सहायता नहीं करेंगे? और मुझे मेरे स्वार्थी रवैये के लिए क्षमा करें! मैं आपके बिना कुछ नहीं कर सकता, आप मेरे मार्गदर्शक हैं। प्रभु, आप मेरी सहायता कीजिए।"

141 तब मैं खड़ा हुआ, और मैंने कहा, "आमीन।" मैंने अपना रुमाल; अपना कोट, इसे उठाया; अपनी टोपी पीछे को लगाई; और अपनी बंदूक उठाई। मैंने कहा, "अब मैंने अपने को सही जगह पर कर लिया है जो मुझे पता है कि कैसे जाना है, मेरी समझ के अनुसार सबसे अच्छा; और अब मैं सीधा एक ओर जाऊंगा, क्योंकि अब तक गोलाई में चलता रहा, मुझे पता नहीं कहां चलता रहा। लेकिन मैं उसी रास्ते पर चलूंगा जिस रास्ते पर आप मुझे बतायेंगे, प्रभु परमेश्वर, मेरे मार्गदर्शक।"

142 मैंने *इस* ओर चलना शुरू किया। मैंने कहा, "यही है, और मैंने अपने आप को इसका विश्वास दिलाया। मैं *इस* मार्ग पर जा रहा हूं। मैं सीधे *इस* ओर जा रहा हूं। मैं कोई बदलाव नहीं करूंगा, मैं *इस* ओर जा रहा हूं। मैं जानता हूं कि मैं सही हूं। मैं *इस* ओर जा रहा हूं।" यदि मैं दूसरे रास्ते पर जाता, तो मैं कनाडा की ओर बढ़ जाता। समझे?

143 ठीक तभी मुझे महसूस हुआ कि किसी ने मेरे कंधे पर हाथ रखा है, ऐसा लगा जैसे किसी मनुष्य का हाथ है, सो, मैंने तुरन्त ही मुड़कर पीछे देखा। वहां कोई भी खड़ा नहीं था। मैंने सोचा, "यह क्या था? " यहाँ पवित्रशास्त्र मेरे सामने रखा है। परमेश्वर ही, मेरा मार्गदर्शक और न्यायी है, जो यहां खड़ा है। मैंने तभी ऊपर की ओर देखा। और ठीक पीछे *इस* ओर, वह कोहरा तभी साफ़ होता गया इतना तक मैं हूरिकेन पहाड़ की चोटी पर वह ऊंचा गढ़ देख सकता था। मैं सीधे उससे दूर जा रहा था, अपनी शिकार की योग्यता पर, मैं तो और दूर जा रहा था, और शाम को और देर होती जा रही थी। मैंने एकदम घूमकर, अपना मुख *उसी* दिशा में कर लिया। मैंने अपनी टोपी हाथ में लेकर और हाथ ऊपर उठाये, मैंने कहा, "परमेश्वर मेरा मार्गदर्शन करिये, आप मेरे मार्गदर्शक हैं।"

144 मैंने फिर चलना शुरू किया। और मुझे वहां पहुँचने के लिए सीधे ऊँची चट्टानों और हर एक चीज को पार करना था, और समय बीतता गया। वहां अधियारा होता गया। और हिरन मेरे सामने से कूदते हुए जा रहे थे। मैं कुछ भी नहीं सोच पा रहा था, केवल अपने आप को उस पहाड़ के रास्ते पर रखकर सीधा चल रहा था।

145 और मैं जानता था कि यदि मैं उस बड़े ऊंचे खम्भे तक पहुँच सका जो, श्रीमान डेंटन और मैं... मैंने उस पर तार डालने में वसंत ऋतु में सहायता की थी। हमने उस पर वहां हूरीकेन पहाड़ से टेलीफोन के तार लेकर नीचे, लगभग साढ़े तीन या चार मील, नीचे केम्प तक डाले थे। और वहां पर साथ एक पगडंडी थी, जो की बर्फ के कारण पता नहीं लग पा रही थी। समझे? और हवा चल रही थी और चारो ओर अंधकार था, और बर्फ पड़ रही थी और, आप बता नहीं सकते थे कि आप कहाँ है। और इस अन्धकार के बाद में, केवल यह जानता था कि मैं कुछ नहीं जानता था... मैं यह जानता था कि मैं एक ही मार्ग पर चल रहा हूं, और वह पहाड़ की ओर जा रहा है। क्योंकि मुझे वहां पहाड़ पर पहुंचना था, और खंभा बिल्कुल पहाड़ की

चोटी पर था, और मुझे वहां के लिए लगभग छह मील चलना था। जरा सोचिए, कि कोहरा छह मील तक केवल एक होल के रूप में कट गया, जब तक मुझे खंभा ना दिखा!

146 और तब मैंने—मैंने अपनी बंदूक *इस* हाथ में पकड़ी, और *इस* हाथ को ऊपर किया, क्योंकि मैंने टेलीफोन के तारो को उस—उस पेड़ो पर जड़ता हुआ नीचे झोपड़ी तक ले गया था, ताकि वह वहां पहाड़ पर से नीचे झोपड़े में अपनी पत्नी से बात कर सके। और मैंने उसकी इस तार को लगाने में सहायता की थी। और मैं अपने हाथ को *इस* प्रकार ऊपर किए, कह रहा था कि, "हे परमेश्वर, मुझे वह तार की लाईन पकड़वा दे।" चलते हुए, और मेरा हाथ बहुत दर्द करता, थक जाता, मैं मुश्किल से हाथ को ऊपर नहीं उठा पा रहा था, और मुझे इसे नीचे करना पड़ता। और मुझे फिर बंदूक को *दूसरे* हाथ में बदल कर; कुछ कदम पीछे चलकर यह पक्का करता कि मैं इससे चुक नहीं जाऊं, फिर अपने हाथ को ऊपर उठाकर, चलता, चलना आरंभ करता। देर हो रही है, अंधेरा हो रहा है, हवा चल रही है। और जब डाली हाथ में आ जाती तो कहता, "यह नहीं है! नहीं, यह वो नहीं है।" ओह, यह देता... इसे एक अनिश्चित आवाज ना होने दें।

147 और जब, मैं बस लगभग हार हारने के लिए तैयार ही था, मेरे हाथ ने किसी चीज को छुआ। ओह, प्रभु! जब मैं खो गया था, तभी मुझे पाया गया था। मैं उस तार को पकड़े रहा। मैंने अपनी बन्दूक नीचे डाल दी, और अपनी टोपी सिर से उतार ली, और मैं वहां खड़ा हो गया। मैंने कहा, "हे परमेश्वर, जब आप को खोकर दुबारा पाते है, तो क्या ही अनुभूति होती हैं।" मैंने कहा, "ठीक नीचे इस तार के अन्तिम छोर तक, मैं इसे कभी नहीं छोडूगा। मैं इस तार को पकडे रहूंगा। यह मुझे सीधे उस स्थान तक मार्गदर्शन करेगी जहां इस धरती पर जो कुछ भी मुझे प्रिय है, वह सब नीचे स्थित है। मेरी पत्नी और बच्चे को यह नहीं पता था कि मैं कहाँ पर हूँ, उन्हें यह नहीं मालूम था कि आग कैसे जलाई जाये, उन्हें कुछ भी पता नहीं कि क्या किया जाये, और हवा की तेजी से डालियां आवाज करके टूट रही थी।" मैं किसी भी तरह तार को छोड़ना नहीं चाहता था। मैंने उस तार को तब तक पकडे रहना चाहता था, जब तक मेरा मार्गदर्शन मेरे उन प्रियो तक जो इस धरती पर है ना पहुंचा दे।

148 यह मेरे लिए एक भयानक और बड़ा अनुभव था कि मैंने अपना मार्ग

पाया, लेकिन यह तो आधा भी नहीं था। एक दिन मैं पापो में खो गया था। मैं एक कलीसिया से दूसरे कलीसिया, कुछ ढूंढ की कोशिश कर रहा था। मैं सेवेंथ–डे एडवेंटिस्टों में गया, उन्होंने मुझे बताया, "सब्त को मानो और मांस खाना छोड़ दो।" फिर मैं बैपटिस्ट कलीसिया में गया, पहले बैपटिस्ट कलीसिया में, उसने कहा, "खड़े होकर और यह बताईये कि आप विश्वास करते है यीशु मसीह परमेश्वर का पुत्र है, और मैं तुम्हें बपतिस्मा दूंगा, यही है।" वहां कुछ भी नहीं था। लेकिन एक दिन, वहां एक छोटे से कोयलो के छप्पर तले, मैंने अपने हाथ ऊपर कर लिए, मैंने किसी चीज को पकड़ लिया था; या, मैं यह कहूँ कि किसी चीज ने मुझे पकड़ लिया। वही मेरी जीवन रेखा थी, मेरा मार्गदर्शक। और आज तक वह मुझे यहाँ बचा कर लाया है, मैं इस तार से अपने हाथो को नहीं हटाना चाहता। मैंने अपना हाथ से उसे पकड़ रखा है। उन मतो धारणाओं को, जो वे चाहते हैं करने दो, मैं तो अपने मार्गदर्शक का हाथ पकड़े हूं। क्योंकि इस धरती पर या स्वर्ग में जो भी मुझे बहुत बहुमूल्य है, वह इस रेखा का अन्तिम छोर है। वह यहां तक मुझे सुरक्षित लाया है, बाकी के रास्ते में, मैं उसी पर भरोसा करूंगा। "जब वो जो पवित्र आत्मा है आयेगा, वह आपका मार्गदर्शन करके आपको उजियाले में ले जायेगा... "

149 मित्रो, वह मुझे आज जहां मैं खड़ा हूं यहां तक लाया है। आज मैं जो भी हूं, उसी ने बनाया है। मैं ख़ुशी के साथ आपकी मुलाकात उससे करा सकता हूं। केवल यही एक मार्गदर्शक है धरती या स्वर्ग में जिसके विषय में मैं सब कुछ जानता हूं। जब मैं शिकार पर जाता हूं तो वह मेरा मार्गदर्शक होता है। जब मैं मछली पकड़ने जाता हूं यही मेरा मार्गदर्शक होता है। जब मैं किसी से बात करता हूं तो यही मेरा मार्गदर्शक होता है। जब मैं वचन प्रचार करता हूं तो यही मेरा मार्गदर्शक होता है। जब मैं सोता हूं तो यही मेरा मार्गदर्शक होता है।

150 और जब मैं मृत्यु के पास होऊंगा, तो वहां पर वह खड़ा हुआ। वह मेरा मार्ग दर्शन उस नदी के पार करेगा। "मुझे किसी भी बुरी बात का भय ना होगा, क्योंकि तू मेरे साथ है। तेरी छड़ी और तेरी लाठी, वे मुझे ठीक करके और मेरा मार्गदर्शन करेंगे ताकि उस नदी को पार कर जाऊं।"

आइए हम प्रार्थना करें।

151 स्वर्गीय पिता, मैं इस मार्गदर्शक के लिए जो कि मुझे चलाता है, धन्यवाद

करता हूं। ओह, कभी–कभी, पिता, मैं उसकी आवाज को नहीं सुन पाता हूं, तो मैं डर जाता हूं। मैं चाहता हूं कि वह मेरे बिल्कुल पास रहे क्योंकि मैं नहीं जानता कि किस समय मुझे नदी पार जाना पड़ेगा। मैं चाहता हूं कि वह मेरे पास रहे। प्रभु, मुझे कभी ना छोड़ना। प्रभु आपके बिना मैं न तो बात कर सकता हूं, ना प्रचार कर सकता हूं, ना ही जंगलो में शिकार कर सकता हूं, ना किनारे पर मछली पकड़ सकता हूं, ना ही अपनी कार चला सकता हूं, मैं आपके बिना कुछ भी नहीं कर सकता। आप मेरे मार्गदर्शक हैं। आज मैं सभा को यह बताते हुए कितना प्रसन्न हूं, कि आप मुझे यहां तक कैसे इन सब परस्थितियों में से निकाल कर लाये है!

152 मैं उस दिन यह सोच रहा था; अधिक वर्ष नही हुए, जब मैं सड़क पर नीचे खड़ा था, जब मैं सड़क पर नीचे खड़ा था, कि मेरे परिवार की गलती के कारण, तो कोई भी मुझसे बात नहीं करना चाहेगा। मैं बिना संगति के लिए अकेला था। मेरे साथ कोई मतलब नहीं रखना चाहता था। उन्होंने कहा, "इसका पिता शराब बेचने वाला है।" और, प्रभु, मुझ से कोई बात नहीं करेगा। और मैं लोगों से प्रेम करता हूं। लेकिन एक दिन जब मैंने उस रेखा को पकड़ लिया! प्रभु, मैं सोचता हूं कि अब मुझे थोड़ा सा आराम करने के लिए जंगल में चला जाना चाहिए। इसने क्या किया? कोई व्यक्तित्व नहीं है ना ही शिक्षा है; मेरे पास कुछ भी नहीं है। लेकिन प्रभु यह तो आप है। केवल आप, प्रभु। आप ही ने मुझे सही निशाने पर लग जाने दिया, आप ही ने मुझे बड़ी मछली पकड़ने दी, क्योंकि आप जानते हैं कि मैं यह करना चाहता था। आपने मुझे पिता और माता दिए। आपने मुझे भाई लोग और बहने दी है। आपने मुझे अच्छा स्वास्थ्य दिया है। आप ही ने मुझे एक पत्नी दी है। आपने मुझे परिवार दिया है। प्रभु, आप मेरे मार्गदर्शक हैं। मुझे अपना हाथ पकड़े रहने देना, मुझे हाथ ना छुड़ाने दें। यदि एक हाथ थक जाएगा, तो मैं बस हाथ बदल लुंगा। प्रभु, मेरी सहायता करें।

153 और अब यहां जितने बैठे है उसी जीवन रेखा को पकड़ ले, प्रभु, पवित्र आत्मा जो हमारा जीवन है, जीवन का स्त्रोत है। और होने दे कि वह हमारा मार्गदर्शन करता हुआ उस खुशहाल देश की ओर ले जाये, जहां पर इस जीवन की कठिनाईयां समाप्त हो जाती हैं और धरती के कार्य समाप्त हो जाते है, और तब वहां बूढी अवस्था और दुर्बल लोग ना होंगे, अब और वहां थका देने वाली रातें ना होगी, वहां रोना प्रार्थना करना, और वेदी की पुकार नहीं होगी, लेकिन वहां हम हमेशा के लिए नवयुवक होंगे, बीमारी

और दु:ख वहां ना होगा। और वहां पर पाप ना होगा, और हम परमेश्वर की धार्मिकता में होकर, उन आने वाले सभी कालो में, कभी ना समाप्त होने वाली उस अनंतता में होगे। पिता, इसे ग्रहण किजिए।

154 और अब, पिता, यदि यहां पर कोई आज रात ऐसा हो, जिसने जीवन रेखा को कभी ना पकड़ा हो तो, होने दे प्रभु वह अभी इसे पा सके। और ऐसा हो कि वह पवित्र आत्मा जिसने मेरा मार्गदर्शन किया... और मैं अपने ह्रदय की गहराई और अपने हाथो को, आपके वचन पर रखकर कहता हूं, कि वह सदा ठीक सिद्ध हुआ। मैं बहुत बार गलती करता हूं। लेकिन वो सही होता है। प्रभु, उसे मेरे साथ बने रहने दे। और मुझे उसके संग बने रहने दे। औए होने पाए आज रात, यहां बहुत से लोग, जो उसे नहीं जानते, होने दे कि वे उसके ना बदलने वाले हाथ को पकड़ ले, ताकि उनका भी मार्गदर्शन हो सके।

155 और किसी दिन हम भी उस नदी के पास निकल आयेगे। वो सुबह भी कोहरा भरी होने जा रही है। और वह पुराना समुंद्र गरजेगा, वह पुरानी यरदन, भयानक तोड़ देने वाली मृत्यु हमारे जीवन के श्वास को बाहर करती हुई। लेकिन, परमेश्वर, मैं—मैं नहीं डरूंगा। मैंने इसको बहुत पहले ही शांत कर दिया है। मैं अपने सिर के कवच को उतार देना चाहता हूं, एक सैनिक की तरह, पीछे मुड़ कर, उस मार्ग को देखना चाहता हूं जहां से वह रेखा मेरा मार्गदर्शन करती हुई मुझे लाई है। मैं उन जंगलो को देखता हूं जिनमें से होकर निकला हूं, और हर कठिन हिस्सो को, और हर मील के पत्थर, जिनको मैं रौंदता हुआ निकला हूं, लेकिन मैं उस तार को पकड़े रहा हूं। जैसा कि आपने कहा, कवि कहता है:

> कुछ पानी में होकर, और कुछ बाढ़ में से होकर,
> कुछ कठिन परीक्षाओं में से होकर, लेकिन सब उसके
> लहू में से होकर।

और हम *उस* पुरानी तलवार को ले लेंगे, जो पूरे मार्ग पर हमारी रक्षा करती आयी है, और उसको म्यान में पीछे रखकर, चिल्लाऊंगा, "हे पिता, आज प्रात: नाव भेज दो, मैं घर में आ रहा हूं।" प्रभु, आप वहां होंगे। आपने प्रतिज्ञा की है। आप असफल नहीं हो सकते।

156 और हर एक जन जो यहां है उसे आशीषित कीजिए। और यदि वह नहीं जानते है कि इस रेखा को कैसे पकड़ा जाये, और उन्होंने उसे कभी

नहीं छुआ है, तो होने दे कि पवित्र हाथ आज ऊपर उठे, चाहने वाले हाथ, इच्छा रखने वाले हाथ, और वह उस जीवन रेखा को छू ले और वह उनके हृदय की इच्छा अनुसार उनका मार्गदर्शन करेगी, एक सिद्ध शांति और संतोष और आराम मसीह में देगी।

157 अपने सिरों को झुकाए हुए, कोई अपने हाथो उठाकर कहेगा, "प्रभु, मुझे करने दो। मेरा हाथ पकड़ लीजिए"? ओह, परमेश्वर आपको आशीष दे।

जब रास्ते की धुन्ध बढ़ रही है, बहुमूल्य प्रभु, मेरे पास रहना,
जब मेरा सारा जीवन चला जाने को हो;
उस नदी पर मैं खड़ा होऊंगा,
आप मेरे कदमो का मार्गदर्शन करना, मेरा हाथ थामे रहना,
बहुमूल्य प्रभु, मेरा हाथ पकड़ कर, मेरा मार्गदर्शन कर।

158 क्या कोई और है जो अपना हाथ उठाकर कहे, "प्रभु, आज रात मैं उस जीवन रेखा को छू लेने का अनुभव करना चाहता हूं। मैं अनुभव करना चाहता हूं कि मसीह ने मेरे सारे पाप क्षमा कर दिए है, और अब इस घड़ी के बाद से मैं एक नई सृष्टि बनना चाहता हूं"? परमेश्वर आपको आशीष दे। क्या कोई और है जो कहे, "मैं भी आपको छू लेना चाहता हूं, प्रभु। मुझे अपने आपे से छुड़ा ले"? बहन परमेश्वर आपको आशीष दे। "प्रभु, मुझे अपने आपे से आजाद होने दे कि मैं अपने को आप के अन्दर पाऊं।" परमेश्वर आपको आशीष दे। और परमेश्वर आपको आशीष दे। यह ठीक है। "मुझे अपने से स्वतंत्र होने दो, प्रभु। मुझे सब कुछ भूल जाने दे।" भाई, परमेश्वर आपको आशीष दे। "मुझे भी... " परमेश्वर आपको आशीष दे, बहन। "मेरा सारा मुझ से ज्ञान निकाल दे।" बहन, परमेश्वर आपको आशीष दे। मनुष्य की बनाई हुई योजनाओं का विश्वास ना करें। मार्गदर्शक के पीछे चले, वो आपको सत्य की ओर मार्गदर्शक करेगा। "प्रभु यीशु, मेरा मार्गदर्शन करे और ले चले।" वहां पीछे परमेश्वर आपको आशीष दे। ओह, वहां बहुत से हाथ उद्धार पाने के लिए खड़े हैं। अब जबकि आप...

159 यहां सामने मंच पर हम लोगो को नहीं बुला सकते है, क्योंकि सब जगह लोग बैठे हुए हैं। लेकिन वह ठीक यही पर है। आप अच्छी तरह जानते हैं,

कि जब आपने अपने हाथ उठाये, ये तो आपके ह्रदय में कुछ हुआ। यीशु ने कहा, "जो मेरे वचन सुनता है और मेरे भेजने वाले का विश्वास करता है, उसके पास अनंत जीवन है।" आपका इससे वास्ता है? तो यहां हौद में पानी भरा हुआ है। बपतिस्मे के लिए काफी समय होगा। आइए हम प्रार्थना करें।

160 हमारे स्वर्गीय पिता, आज रात खरखराई आवाज में इस टूटे– फूटे सन्देश द्वारा, पवित्र आत्मा अवश्य ही कहीं न कहीं गया है। और वहीं गया है जहां उसकी आवश्यकता हैं, और प्रभु, आज रात, बहुत से लोगो ने लगभग पंद्रह या बीस लोगो ने अपने हाथ उठाये है, कि उन्हें मार्गदर्शक की आवश्यकता है। उन्होंने अनुभव किया है कि वे अपने आप को मूर्ख बनाते रहे है। वह यह कहने का यत्न करते रहे हैं कि, "मैं ठीक हूं," परन्तु ह्रदय की गहराई में वह जानते हैं कि ऐसा नहीं हैं। और प्रभु वे आपको अनुभव करना चाहते हैं। वे मार्गदर्शक चाहते हैं। वे आपका अधिकार लेना चाहते हैं। आप कभी बस बहुत है ऐसा नहीं कहते। वह इस यात्रा के लिए आपको हस्ताक्षर देना चाहते हैं। उन्हें नहीं मालूम कि वहां कैसे पहुंचा जाए। कोई नहीं जानता कि इन्हें वहां कैसे ले जाया जाये; केवल आप ही है। वे परमेश्वर के द्वारा दिए गए मार्गदर्शक के लिए आ रहे हैं जो कि पवित्र आत्मा हैं। वे अपने हाथ उठा चुके हैं।

161 हे पवित्र आत्मा और मार्गदर्शक, इनके ऊपर उतर आ। हर पाप को क्षमा कर दे। इनके अपराधो को क्षमा कर दे। आज रात इन्हें मसीह की देह में ले ले, जिससे वह परमेश्वर के प्रवाह को उस रेखा में से अनुभव कर सके जो उनकी अगुवाई करके वहां यर्दन, और यर्दन के पार उस प्रतिज्ञा के देश में ले जायेगा। होने दे कि ये सीधे–सीधे वचन के पीछे चले। वचन ने कहा, "प्राश्चित करो, और यीशु मसीह के नाम में बपतिस्मा लो।" होने दे कि ये इसे किसी और रीति से करने का प्रयत्न ना करे। होने पाए कि ये वचन के पीछे चले, क्योंकि वही एक मार्गदर्शक है जो अगुवाई करेगा। हमें इसी—इसी कदम से ऊपर चढ़ना है जब तक हम उस मार्गदर्शक को ना पकड़ ले। प्रभु, इन्हें ग्रहण करे। ये आपके हो सके। अब यह आपके हाथों में हैं, विजयी चिन्हों के समान है, कोई मनुष्य उनको छिन नहीं सकता है। मैं विश्वास करता हूं कि आप इन्हें बचाए हुए लोगों की तरह ग्रहण करेंगे। मैं विश्वास करता हूं कि जितनो ने अपने हाथो को ऊपर उठाया है, वे अपने हाथो को ऊपर नही उठा सकते थे जब तक कि कोई उनसे ना बोलता।

वह आप थे, पवित्र आत्मा और मार्गदर्शक।

162 वे देख रहे हैं कि समय समाप्त हो रहा है, कोहरा धरती पर छा रहा है, बड़े–बड़े मत सिद्धान्त वाले और—और चीजें, कलीसियायें आपस में एक साथ मिल रहे है संघ बनते जा रहे है। और, हे परमेश्वर, वे किस तरह से वह यह कहना चाहते हैं कि, "जो हमसे किसी प्रकार भिन्न है, उन्हें यह स्थान छोड़ कर और अलास्का जाना पड़ेगा।" और यह सब चीजें जिनकी वे धमकी दे रहे हैं, यह हमारे लिए कोई नई बात नहीं है, उस महान मार्गदर्शक ने हमें यह सब वचन के मार्ग में दिखा दिया है। हम तो बस उसके एक भाग से होकर निकल रहे हैं।

163 पिता परमेश्वर, आज रात आप उनसे बोले है, और मैं आपको इन सब लोगो को वचन के विजयी चिन्ह के रूप में दे रहा हूं। यीशु के नाम में।

164 अब, पिता, इस मेज पर यह सारे रुमाल बीमार लोगों के लिए रखे गुए है, हो सकता है, इनमें से यह किसी बच्चे या किसी मां, या किसी बहन, या भाई के लिए हो; इन में छोटी–छोटी बातो वाली पीन भी लगी है। और अब मैं इनको पास से पकड़ लेता हूं। अब, हमें पवित्र शास्त्र में सिखाया गया है कि वह लोग रुमाल और कपड़ो को पौलुस से छुआ कर ले जाते थे, और तो बीमार लोग चंगे हो जाते थे, प्रेत आत्माएं लोगों से बाहर निकल जाती थी। अब हम यह अनुभव करते हैं, प्रभु, कि पौलुस एक मनुष्य ही था, एक साधरण मनुष्य ही था। लेकिन यह आपके पवित्र आत्मा का अभिषेक उस पर था जिससे कि वह रूमाल आशीषित हो जाते थे, और लोगो का पौलुस में यह विश्वास था कि वह आपका प्रेरित था। अब पौलुस तो हम से अलग हो गया है, पर मार्गदर्शक नहीं, वह अब भी यहां पर है। और, परमेश्वर, मैं प्रार्थना करता हूं कि आप इन रुमालों को आशीषित करेंगे, और होने पाए मार्गदर्शक इनका मार्गदर्शन करके पूर्ण आत्मसमर्पण तक ले जाये।

165 हमें फिर से यह बताया गया है कि जब इस्राएली अपने मार्गदर्शक के पीछे चल रहे थे, और वह जब यर्दन के पास, (बल्कि) लाल सागर के पास आ गए। वह तो अपने पूरी कर्म रेखा पर थे और जब वे रुक गए थे, और तो मार्गदर्शक ने वहां उनका मार्ग दर्शन किया था। क्या? ताकि अपनी महिमा दिखाये। और जब सारी आशाये जाती रही, तब परमेश्वर ने आग के स्तंभ में से होकर देखा, और यहां तक कि पुराना मृत सागर भी डर गया और पीछे हट गया, और जिससे इस्राईल के लोगो के लिए प्रतिज्ञा किए हुए देश

की ओर जाने के लिए मार्ग बन गया।

166 सच में, प्रभु, आप आज भी वैसे ही परमेश्वर है। हो सकता है यह मसीही लोग हो, होने पाए यह ठीक अपनी कर्म रेखा में हो, फिर हो सकता है बीमारी ने उनको घेर कर एक जगह में कोने में रोक लिया हो। आज रात यीशु के लहू में से होकर उनको देखें, ताकि शैतान डर जाए, वह निकल जाएगा, और आपके बच्चे अच्छे स्वास्थ्य की प्रतिज्ञा की ओर पहुंच जायेगे। पिता, इसे प्रदान करे। मैं यीशु मसीह के नाम में इसे अपने शरीर से उन तक भेज रहा हूं।

167 मैं इस सभा को आपके सामने प्रस्तुत करता हूं, और विश्वास के द्वारा आपके महिमायुक्त वेदी के सामने जो स्वर्ग में है लाता हूं। क्योंकि जहां कि बीमारी की हर भावना या, जो भी इन में घटी कमी जो इनके जीवन में कही भी हो, परमेश्वर, आप उसको साफ कर दे, और इन्हें अपना बना ले। पिता, इन्हें चंगा करे। और होने पाए वो पुनरुत्थान की सामर्थ जिसने यीशु को कब्र में से जिवित किया, इनके मरणहार शरीरो को भी जिवित करे और इन्हें मसीह में नई सृष्टी बना ले। इन्हें अच्छा स्वास्थ और समर्थ दे कि आपकी सेवा करे।

168 हे प्रभु, मुझे याद रखे। मैं जो आपका दास हूं। प्रार्थना के समय आवश्यकता पर मेरी सहायता करे। और मैं प्रार्थना करता हूं कि पवित्र आत्मा हमारा मार्गदर्शन करे और हमे इस्तमाल करे, और उस दिन तक जब हम यीशु मसीह को आमने सामने उसके महिमा भरे आगमन में हवा में उठा लिए जाने के समय तक ना मिले। मसीह के नाम में हम यह प्रार्थना मांगते हैं। आमीन।

मैं उससे प्रेम करता हूं, मैं... (क्या आप करते है?)
क्योंकि उसने पहले मुझसे प्रेम किया
और मेरे उद्धार को खरीद लिया
कलवरी के पेड़ पर।

169 अब, यदि आप जिसको आपने देखा है उससे प्रेम नहीं करते तो वो जिसको आपने नही देखा, उससे कैसे प्रेम कर सकते है? अब जब हम *मैं उससे प्रेम करता हूं* वाले गाने को गाते है, तो आइए हम अपने पास वाले से पूरे प्रेम में भर कर हाथ मिलाये।

मैं उससे प्रेम करता हूं...

परमेश्वर आपको आशीष दे... ? ... परमेश्वर आपको आशीष दे... ? ... परमेश्वर आपको आशीष दे... ? ... परमेश्वर आपको आशीष दे, भाई नेविल... ? ... उह–हुंह। परमेश्वर आपको आशीष दे... ? ...

कलवरी के पेड़ पर।

अब आईये हम अपने हाथ उसके लिए खड़े करे।

मैं उससे प्रेम करता हूं, मैं उससे प्रेम करता हूं
क्योंकि उसने पहले मुझसे प्रेम किया
और मेरे उद्धार को खरीद लिया
कलवरी के पेड़ पर।

170 क्या आप एक अच्छा गाना सुनना चाहेंगे? मैं समझता हूं कि इस समय यहां हमारे बीच में इंडियानापोलिस के सुसमाचार फ़ैलाने वालो के गीत निर्देशक उपस्थित है। मेरा विश्वास है कि वे कैडल आराधनालय में गाते है। क्या यह यह सही है? ठीक है, श्रीमान। उसका स्थान कैडल आराधनालय है। आप में से कितनो को ई. हावर्ड कैडल की याद हैं? ओह, प्रभु! परमेश्वर उनके प्राण को विश्राम दे। वह हंसमुख चिड़िया हवा में उड़ने वाली, यह गाना मुझे उस एक महिला से सुनना बहुत पसंद करता था, मैंने अपने जीवन में इतना अच्छा गाने वाला कभी नहीं सुना, और वह श्रीमती कैडल थी वे गाती थी, "इससे पहले कि आप अपना कमरा आज प्रात: छोड़ते, क्या तुमने मसीह जो हमारा बचाने वाला है उससे प्रार्थना की, जैसे कि वह आज की ढाल है? "

171 ठीक वहां सड़क पर एक प्रात: मैं उन दो झोपड़ीनुमा कमरों में, मैं जाकर और आग जलाने का प्रयत्न कर रहा था। स्टोव जलने को तैयार ही नहीं था। और मैंने जलाने की कोशिश की, और हवा ने आकर, मेरे सामने उसे बुझा दिया। और बहुत ठंड थी, और मैं जमने को हो रहा था। और पूरे फर्श पर कोहरा छाया था, और मैं वहां नंगे पैर; उस पर छोटा भट्टी का सा पाईप का टुकड़ा रखा था, उसे जलाने की कोशिश कर रहा था। और मेरा... मेरा और मेडा का विवाह बस तब ही हुआ था। और मैंने पुरानी गीली लकड़ियों को जलाने की कोशिश की, पर नहीं जली, और मैं वहां बैठा सोच रहा था, मैंने सोचा, "ओह, प्रभु! मैं फिर कोशिश करूंगा।" काम पर जाना था, और उस पुराने स्टोव को हवा देकर *इस* तरह जलाना ही था। और मैंने वहां आगे बढ़कर और रेडियो चला दिया, और उस पर

वह गा रही थी, "इससे पहले आज प्रात: तुमने अपना कमरा छोड़ा, तुमने प्रार्थना करने के लिए सोचा," मैं फर्श पर गिर सा पड़ा, "वह गा रही थी हमारे बचाने वाले मसीह के नाम में, जो कि आज एक ढाल की नाई है?" ओह, मुझे उस महिला का गीत सुनना कितना अच्छा लगता है!

172 जब कभी मैं नदी को पार करता हूं, तो मैं विश्वास करता हूं कि मैं श्रीमती कैडल को वहां बैठी है उसे सुनूंगा। आप जानते हैं, कि मैं हमेशा पहले ही समय नियुक्त करता हूं। नदी के इस पार, एक सदाबाहर पेड़ है, आप जानते हैं, एक जीवन का पेड़ है; और वहां नदी के उस पार, वहां एक स्वर्गदूतों का दल दिन और रात गाने गाता है, क्योंकि वहां रात नहीं होती है, पूरे दिन गाते है, देखो। मैं एक स्थान ढूढ़ लूंगा और पीछे बैठकर और इसे सुनूंगा। मैं विश्वास करता हूं वहां मैं श्रीमती कैडल को गाते सुनूंगा।

173 परमेश्वर हमारे भाई को आशीष दे। मैं आपका नाम भूल गया। क्या नाम है, भाई? [भाई कहता है, "नेड वूलमैन।"—सम्पा।] भाई नेड वूलमैन अब आपके लिए गायेंगे। भाई वूलमैन, आज रात आपको यहां अपने बीच पाकर हमें खुशी है। [भाई वूलमैन गाते है *मेरे ह्रदय का आराधनालय*।]

62-1014E मार्गदर्शक
ब्रंहम टेबरनेकल
जेफ्फ़रसनविल, इंडिआना यू.एस.ए

HINDI

©2024 VGR, ALL RIGHTS RESERVED

VOICE OF GOD RECORDINGS, INDIA OFFICE
19 (NEW NO: 28) SHENOY ROAD, NUNGAMBAKKAM
CHENNAI 600 034, INDIA
044 28274560 • 044 28251791
india@vgroffice.org

VOICE OF GOD RECORDINGS
P.O. BOX 950, JEFFERSONVILLE, INDIANA 47131 U.S.A.
www.branham.org

सर्वाधिकार सूचना

सर्वाधिकार सुरक्षित। इस पुस्तक को व्यक्तिगत उपयोग के लिए घर के प्रिंटर पर छापा जा सकता है या यीशु मसीह के सुसमाचार को फैलाने के लिए एक साधन के रूप में निःशुल्क दिया जा सकता है। वॉयस ऑफ गॉड रिकॉर्डिंग्स® की स्पष्ट लिखित अनुमति के बिना इस पुस्तक को बेचा नहीं जा सकता, बड़े पैमाने पर प्रतिलिपि तैयार नहीं किया जा सकता, वेबसाइट पर पोस्ट नहीं किया जा सकता, पुनर्प्राप्ति प्रणाली में संग्रहीत नहीं किया जा सकता, अन्य भाषाओं में अनुवाद नहीं किया जा सकता, या धन मांगने के लिए उपयोग नहीं किया जा सकता।

अधिक जानकारी या अन्य उपलब्ध सामग्री के लिए कृपया संपर्क करें:

VOICE OF GOD RECORDINGS, INDIA OFFICE
19 (NEW NO: 28) SHENOY ROAD, NUNGAMBAKKAM
CHENNAI 600 034, INDIA
044 28274560 • 044 28251791
india@vgroffice.org

VOICE OF GOD RECORDINGS
P.O. BOX 950, JEFFERSONVILLE, INDIANA 47131 U.S.A.
www.branham.org